स्वर्णोदय

अभीक्षण ज्ञानोपयोगी परम पूज्य
आचार्य श्री 108 वसुनन्दी जी मुनिराज के
'स्वर्ण जयंती वर्ष' के उपलक्ष्य में

अजितनाथ जी मनमोहक है, और गुणों का भान करें,
अतिशयकारी महिमाधारी, तीन लोक का ज्ञान भरें।
छवि आपकी जब–जब देखी, अन्तर्मन में खो जाता,
वसुनन्दी के दिव्य रूप हो, जो देखे वो हो जाता।।

–ऐलक विज्ञानसागर

प्रकाशक – अतिशय क्षेत्र जय शांतिसागर निकेतन, मंडौला, गाजियाबाद

पावन प्रसंग

प.पू. आचार्य श्री वसुनन्दी जी मुनिराज के स्वर्णोदय महोत्सव (50वें जन्मोत्सव) के उपलक्ष्य में प्रकाशित

कृति	:	स्वर्णोदय
आशीर्वाद	:	प.पू. अभीक्ष्ण ज्ञानोपयोगी आचार्य श्री 108 वसुनन्दी जी मुनिराज
रचियता	:	ऐलक श्री 105 विज्ञानसागर जी महाराज
प्रेरणा	:	क्षुल्लिका श्री 105 निर्वाणनन्दनी माताजी (ब्र. केशर बाई)
सहयोगी	:	ब्र. नन्दनी दीदी (ज्योति दीदी) नागपुर, ब्र. ऋजुता दीदी (रानी दीदी) कारंजा
पुण्यार्जक	:	श्री अरूण जैन श्रीमती मोनिका जैन सपरिवार, अंकुर विहार, दिल्ली
संस्करण	:	2017 (1000 प्रतियाँ)
मूल्य	:	25/- रुपये
प्राप्ति स्थल	:	प.पू. आचार्य श्री वसुनंदी जी महाराज (संघ) 7042206609
	:	अतिशय क्षेत्र जयशांति सागर निकेतन, मंडौला
		सम्पर्क : 9719323429, 9690042294
मुद्रक	:	वसुनन्दी ग्रॉफिक्स, दिल्ली
		मो. 011-65002127, 9958819046

राजस्थान की माटी में....

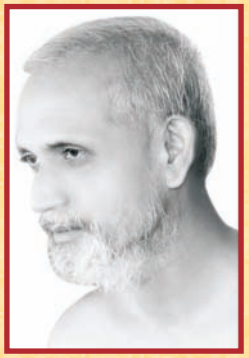

राजस्थान की पावन माटी ने एक दिव्य रूप को जन्मा जिसे भारत की श्रमण परम्परा ने आचार्य श्री वसुनन्दी जी महाराज नाम दिया उस काली रात में आसौज वदी अमावस्या सं. 2023 को रात्रि में जन्म लेने वाला वह दिव्य प्रकाश करने वाला धरती पर अवतरित हुआ। जिसे माता–पिता व जनमानस ने दिनेश अर्थात रवि दिवाकर नाम दिया। पिता श्री रिखबचन्द्र व माता श्रीमती त्रिवेणी का यह राजदुलारा मात्र 12 वर्ष की अल्प आयु में वैराग्य हृदय के अंदर समा गया और एक दिन पं. श्री दौलतराम की वह पंक्तियाँ उनके जीवन में सार्थक हो गई – ''दौल समझ सुन चेत सयाने, काल व्यथा मत खोवे। यह नरतन फिर मिलन कठिन, जो सम्यक नहीं होवे''। बस फिर क्या था मात्र 21 वर्ष की आयु में 14 मई 1988 को अतिशयक्षेत्र सिंहोनिया जी में वात्सल्य रत्नाकर आचार्य श्री विमलसागर जी महाराज को श्रीफल चढ़ाकर ब्रह्मचर्य दीक्षा धारण कर ली। फिर 17 जून 1988 को राजाखेड़ा (राज.) में ज्येष्ठ कृष्ण 14 को पंचकल्याणक प्रतिष्ठा के सुअवसर पर आचार्य श्री सुमतिसागर जी महाराज से दो प्रतिमा के व्रत लेकर फिर एक योगी से 16 नवम्बर 1988 को क्षुल्लक दीक्षा व 11 अक्टूबर को ही मुनि दीक्षा लेकर निकल पड़े मोक्ष मार्ग पर।

आपके ज्ञान और प्रभावना को देखकर राष्ट्रसंत आचार्य श्री विद्यानंद जी मुनिराज ने भारत की राजधानी दिल्ली में 17 फरवरी 2002 को बसन्त पंचमी के दिन उपाध्याय पद से सुसंस्कारित किया। तत्पश्चात् 1 अप्रैल 2009 को दिल्ली में ही एलाचार्य पद एवं 3 जनवरी 2015 को पौष सुदी 13 को कुन्दकुन्द भारती दिल्ली में 16 साधु–साध्वियों के समक्ष श्वेतपिच्छाचार्य आचार्य श्री विद्यानंद जी मुनिराज ने अपने करकमलों से णमोकार मंत्र के तृतीय पद (आचार्य पद) के संस्कार दिये। तभी से इतिहास ने सुनहरे अक्षरों में एक नाम उभरा और वह प.पू. गुरुदेव आचार्य श्री वसुनन्दी जी मुनिराज के नाम से विख्यात हुआ। आपने प्राकृत भाषा पर लगभग 25 कृतियों का सृजन किया है। आपकी यशोगाथा पूरे भारत वर्ष में आपका गुणानुवाद कर रही है। मैं भी धन्य हो गया, ऐसे पूज्य गुरुदेव का सान्निध्य पाकर...

ऐलक विज्ञानसागर
अतिशय क्षेत्र जयशांतिसागर निकेतन, मंडौला
29 सितम्बर 2017

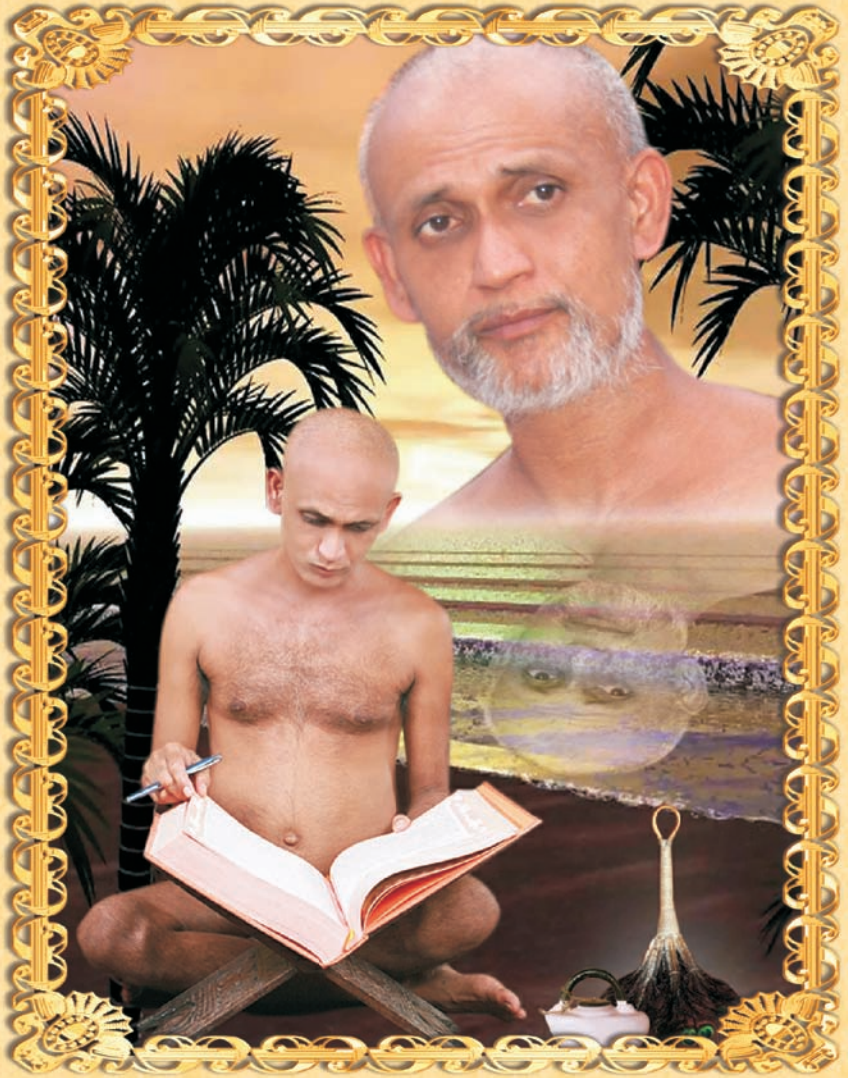

स्वर्णोदय
1967-2017

गुरुदेव आपका क्या कहना
आप तो चलते-फिरते तीरथ हो।
जब भी बैठते ध्यान लगाकर,
मानों सिद्धों की सूरत हों।
जिनवाणी के वरद पुत्र हो,
ध्यानों में शुभ ध्यानी हो।
वाक्य निकलते मोती सम्
मानो वो जिनवाणी हो।

स्वर्णोदय

1967-2017

युवा को शक्ति कहते गुरुवर
संस्कार जगाने आये हो।
इतिहासों में नाम लिखेगा,
इतिहास बताने आये हो।
धर्म जागृति का नारा लेकर,
आपने सूत्र बताये है
सोती हुई मानवता को मानो
आप जगाने आये हो।।

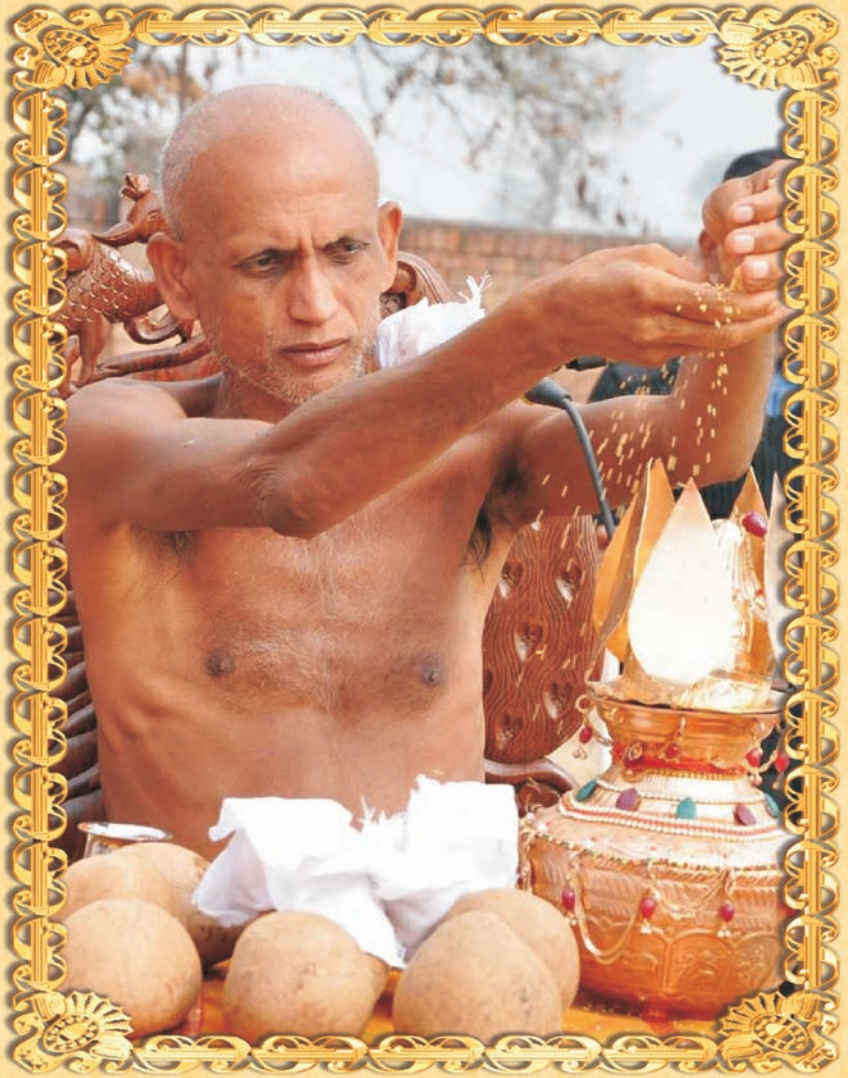

स्वर्णोदय
1967-2017

स्वर्णोदय का महोत्सव
इन्द्रों ने रचवाया है।
यमुना विहार की पावन माटी,
देखो इतिहास बनाया है।।
गुरुदेव की महिमा ऐसी,
माटी में फूल खिलाये है।
जो-जो आये रोते प्राणी
उन्हें सदा हँसायें है।।

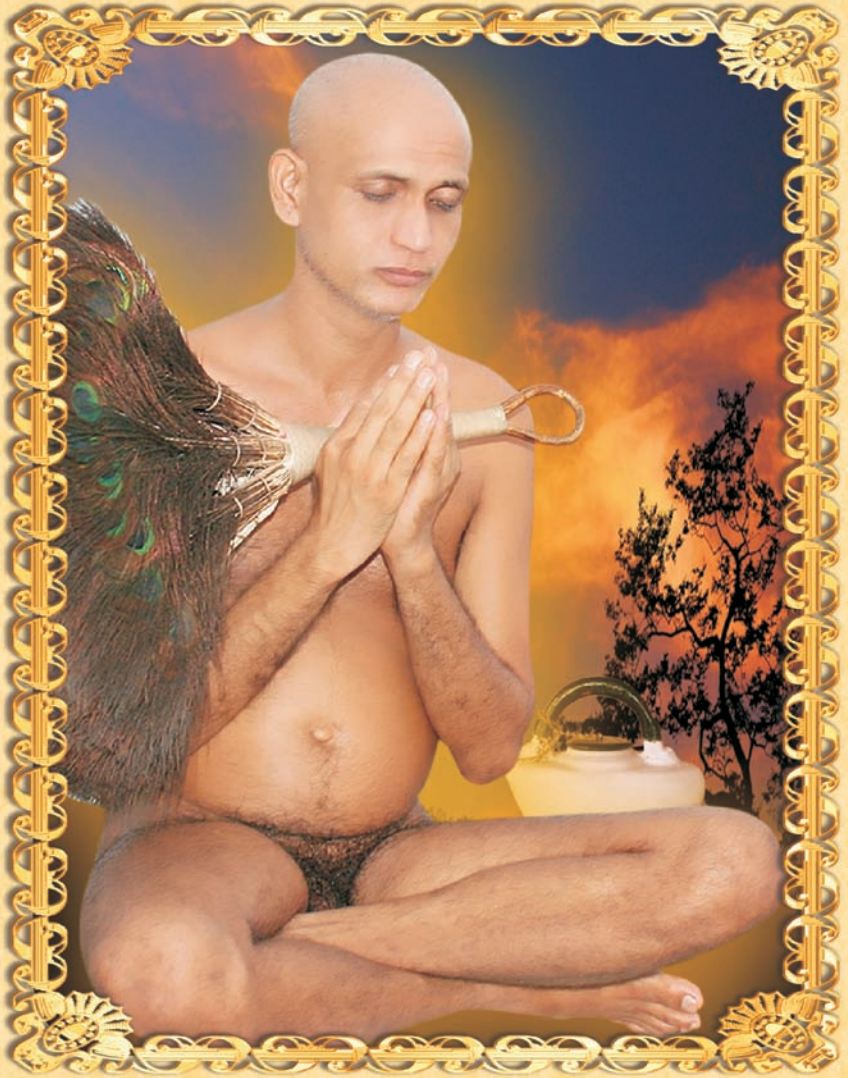

स्वर्णोदय
1967-2017

दिव्य साधना दिव्य वचन से,
मीठे प्रवचन को कहते हो।
दिव्य समाये कण-कणता में,
बाईस परिषह सहते हो।।
ज्ञानी-ध्यानी आप हो गुरुवर
आत्म साधना करते हो।
जब भी चलते खुली सड़क पर
दिगम्बरत्व में रहते हो।।

स्वर्णोदय
1967-2017

ब्रह्मचारी से क्षुल्लक बनकर,
क्षुल्लक से भी मुनिवर बनकर।
फिर उपाध्याय पदवी पाकर,
एलाचार्य भी दिखते सुन्दर।
जिनेन्द्र सागर, निर्णय सागर,
वसुनन्दी बनकर सफर किया
आचार्य शिरोमणि वसुनंदी को,
सब भक्तों ने याद किया।।

स्वर्णोदय
1967-2017

हँसमुख चेहरा, प्रसन्न चित्त हो,
कायोत्सर्ग में करते ध्यान।
करूणा इतनी भरी हदय में,
सुर-नर लखकर करते गान।।
एक बार जिसने भी देखा,
वो चरणों में आता है।
कोई मजहब कही का प्राणी,
तुमको शीश नवाता है।

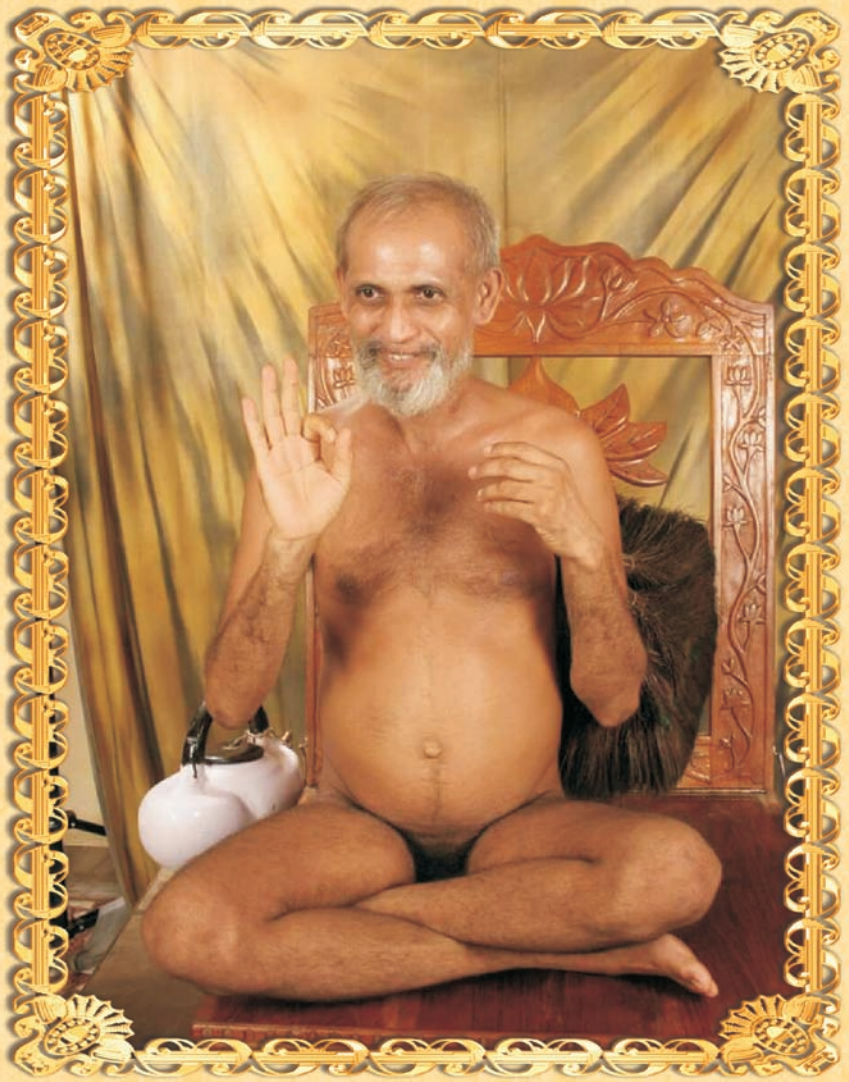

स्वर्णोदय

1967-2017

जिनवाणी से निजवाणी हो,
गुरुवर ऐसा कहते हैं।
चेतनता की मूरत गुरूवर
जग से न्यारे रहते हैं।।
मानव जीवन हमें बताकर,
मानवता का पाठ दिया।
वसुनन्दी के चरण कमल ने,
धरती का उद्धार किया।।

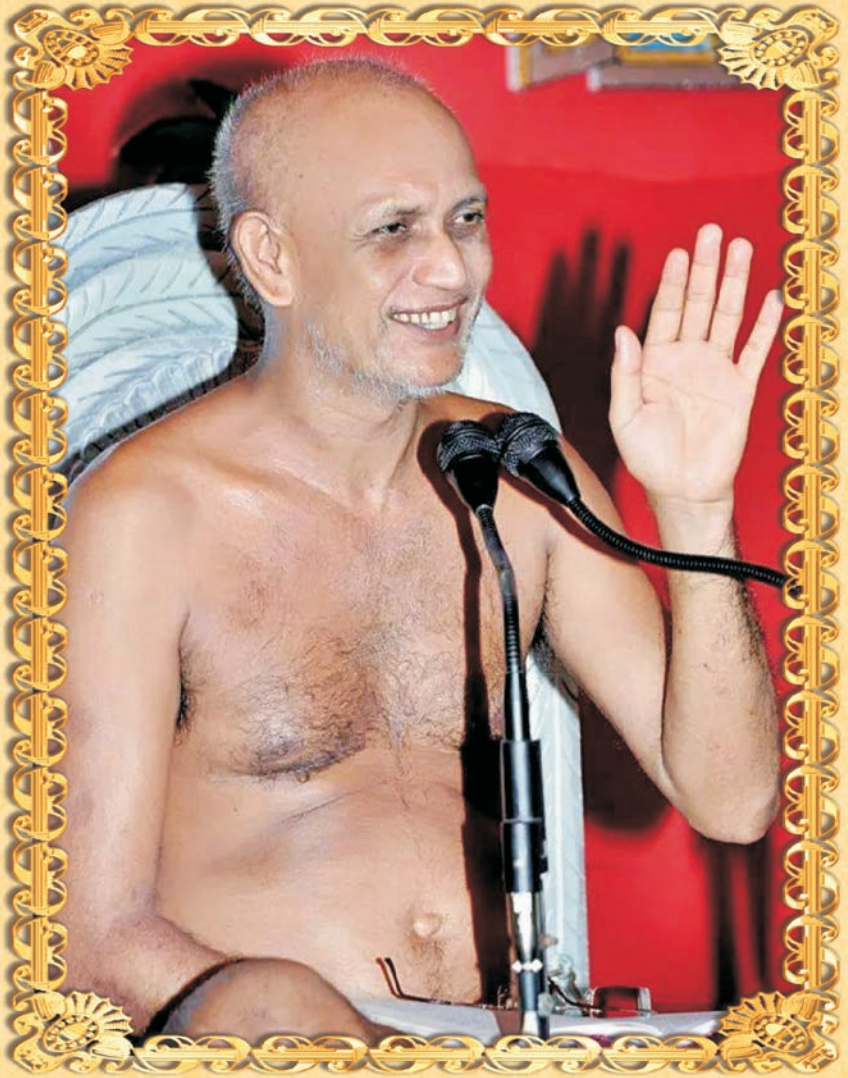

स्वर्णोदय
1967-2017

तन को इतना तपा दिया है,
तन को ही कुन्दन कर डाला।
वाणी पर अधिकार किया है,
वाणी में जादू भर डाला।
मोक्ष मार्ग के निस्पृह योगी,
मेरा वंदन स्वीकार करो।
भटक रहे है कई जन्मों से,
मेरा भी उद्धार करो।

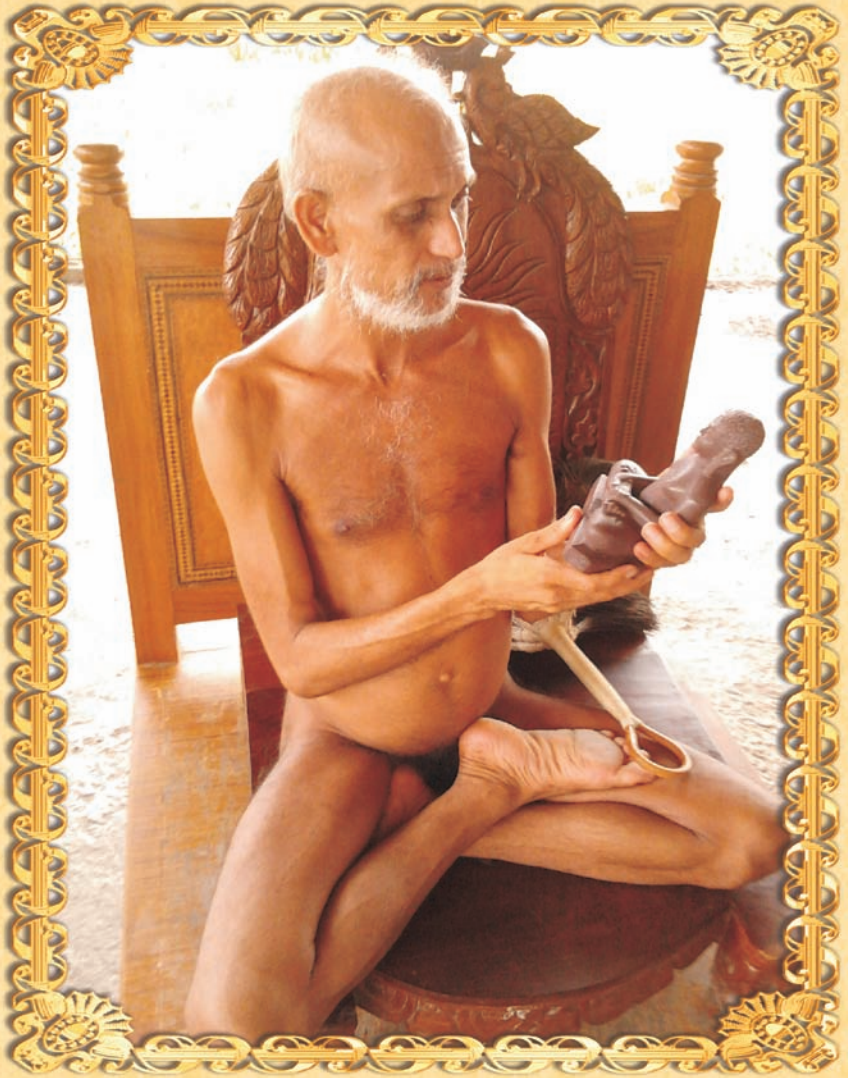

स्वर्णोदय

1967-2017

शुभ भावों की आरती लेकर
श्रद्धा का दीप जलाया है।
मनोनयन का घृत डाला है,
फूलों से द्वार सजाया है।
नही भावना कोई गुरुवर
चरण आपके शरण मिले।
मन की बंगियाँ हरी भरी हो,
मोक्ष मार्ग सा मार्ग मिले।।

स्वर्णोदय

1967-2017

जहाँ-जहाँ भी पग रखते हो,
मिट्टी चंदन हो जाती है।
धरती पग को पाकर देखो,
सुबह-शाम सी हँस जाती है।
गीत गा रहे झरने-बादल,
मानो जय-जय बोल रहे,
अपने दिल का दर्द कर रहे,
मानो कपाट को खोल रहे।।

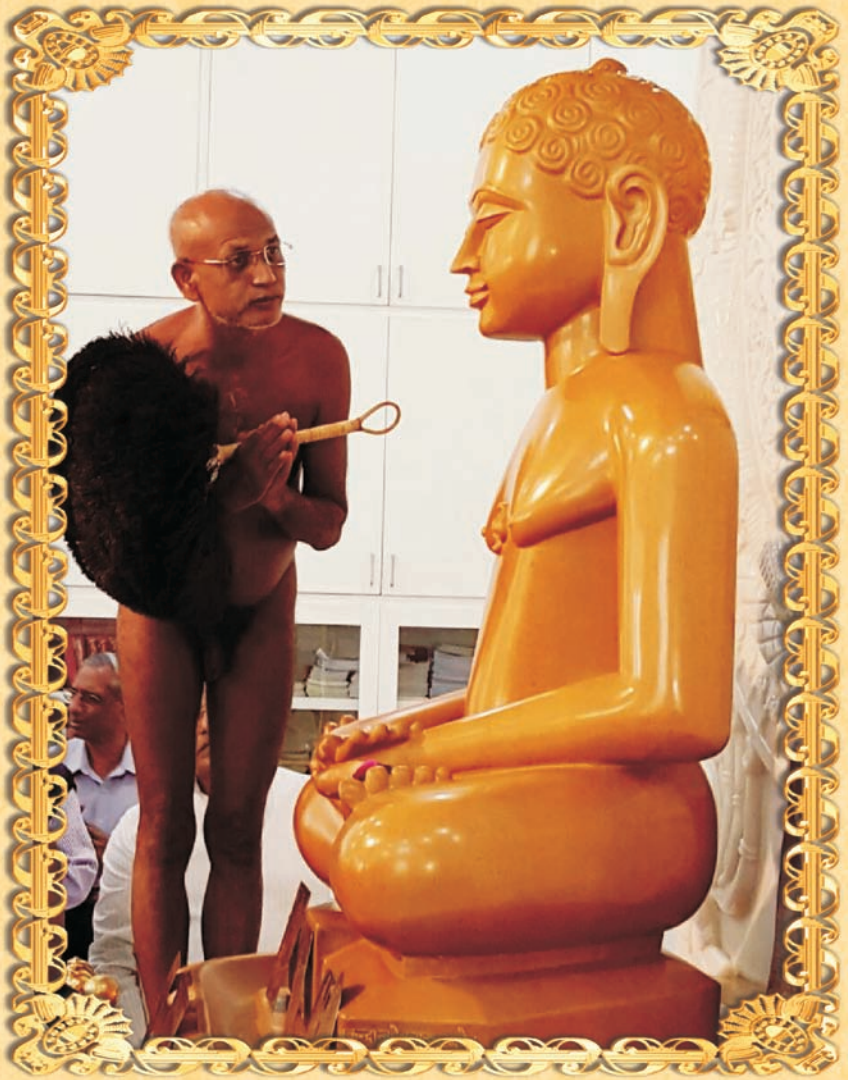

स्वर्णोदय
1967-2017

कठिन साधना करते गुरुवर,
तप-ध्यान में लीन रहे।
मोक्ष मार्ग के पथ प्रदर्शन,
अहोरात्र तल्लीन रहे।
चेतन को इतना जगा दिया है,
संसार असार दिखा डाला।
जो रास्ता था मोक्षमार्ग का,
उस पर ही तुमने गमन किया।

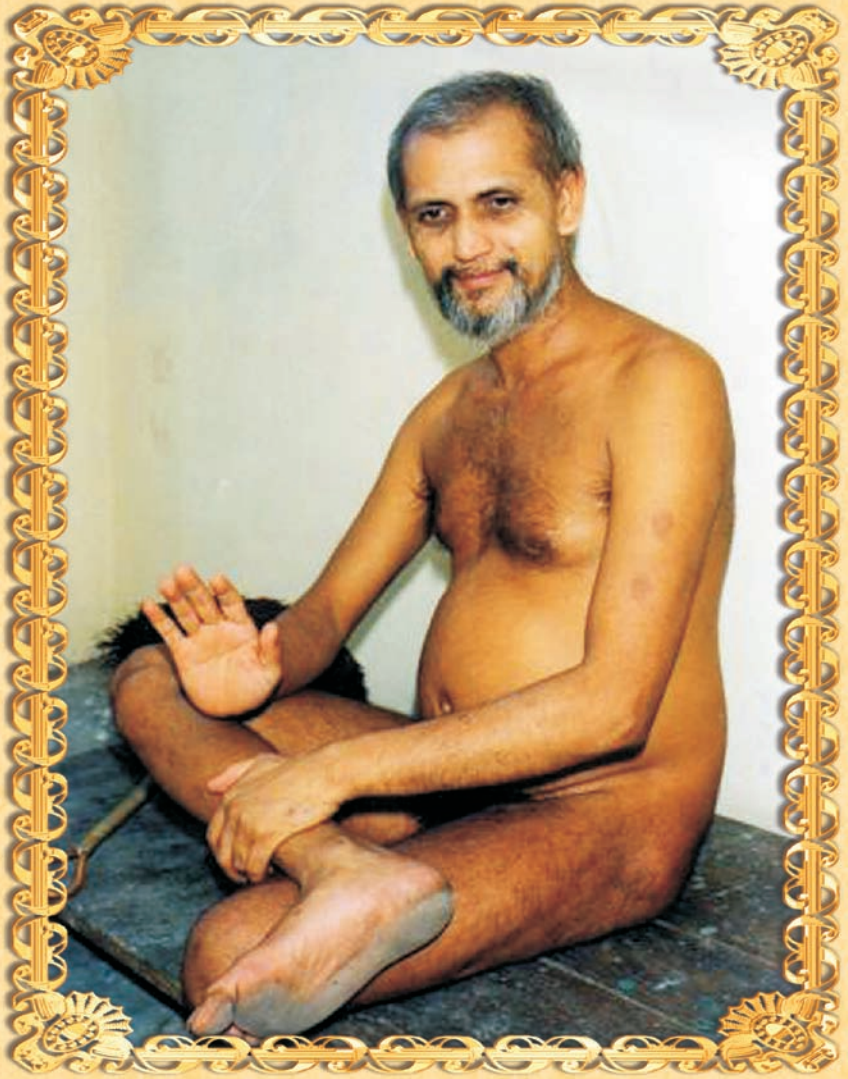

स्वर्णोदय
1967-2017

गुरुजनों का सत्संग पाकर,
देखों मानवता चमकी है।
नील गगन में एक ही तारा
देह तुम्हारी दमकी है।
निश्छल बनकर खड़े तपस्वी,
अभिनंदन देव भी करते हैं।
गुरू चरणों में हम भी आये,
आरती वन्दन करते हैं।।

स्वर्णोदय

1967-2017

आशीर्वाद का कलश भरा है,
शुभ भावों का दान दिया।
दौलत भर दी इतनी सारी,
धरती का कल्याण किया।
नरभव रतन बता रहे,
कठिन तपस्या करते हो।
बालक सम् हो निर्विकार हो,
अध्यात्म साधना करते हो।।

स्वर्णोदय

1967-2017

ऐसा कोई काम नही है,
जो गुरुवर न करते हैं।
चलते-चलते लोग थक गये,
पर गुरुवर न थकते हैं।
चिंतन-लेखन करते गुरुवर,
फिर अनुभव की बात बताते।
स्वयं चले हो पहले गुरुवर,
फिर औरों को मार्ग दिखाते।

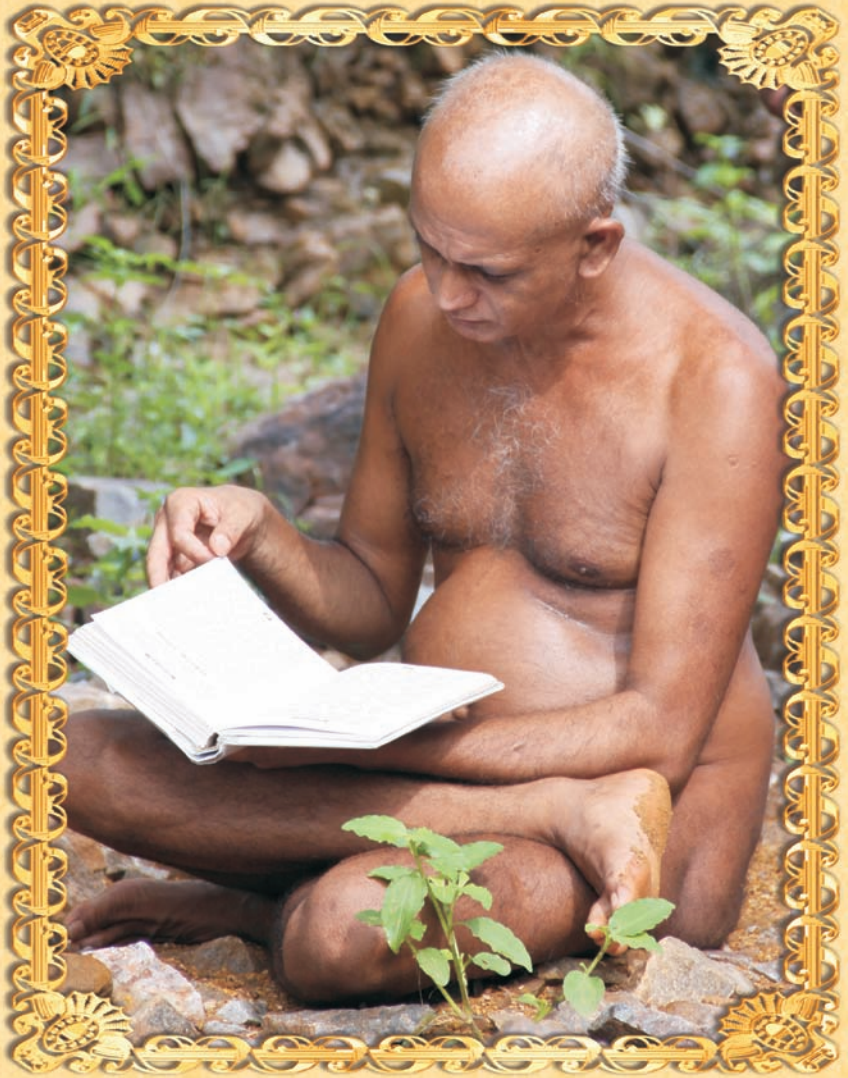

स्वर्णोदय
1967-2017

पिच्छी और कमण्डल लेकर,
मोक्षमार्ग पर चलते हो।
चौबीस घंटे में आहार करते,
केशलोंच को करते हो।
प्रतिक्रमण व स्तुति करके,
समता उर में धरते हो।
वसुनन्दी है अमर तत्व से,
निडर सजग से चलते हो।।

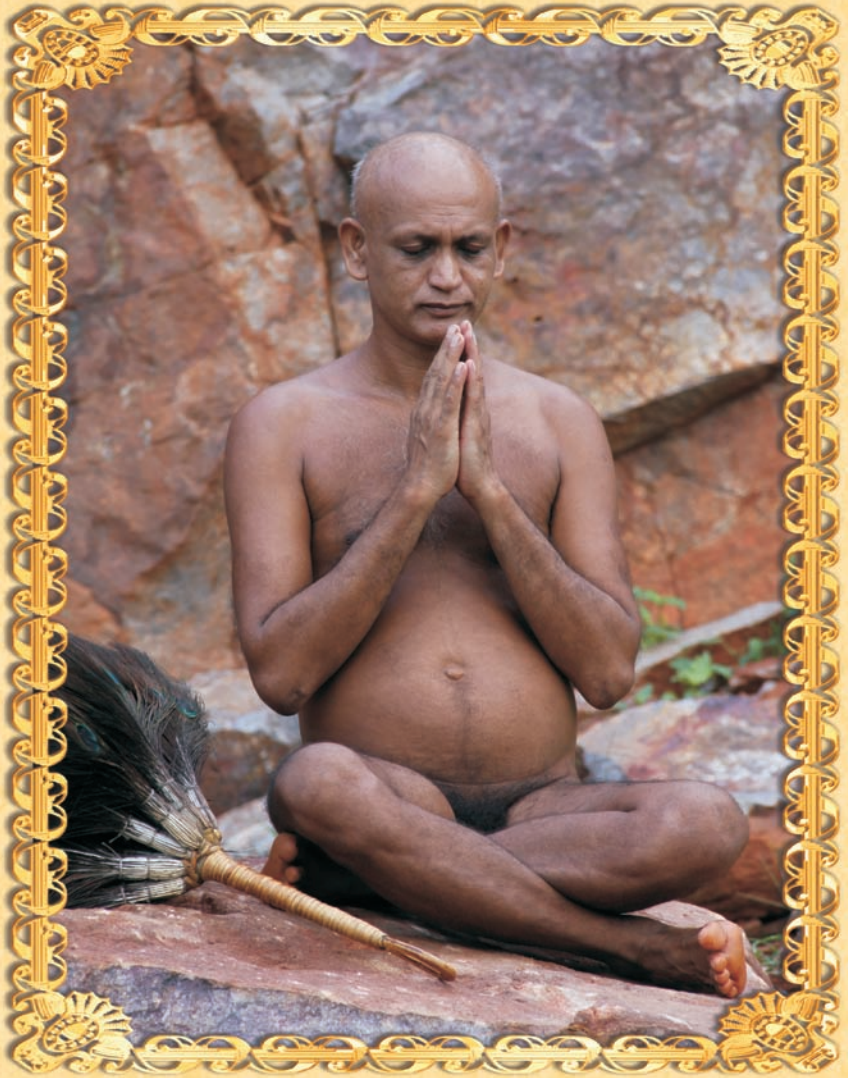

स्वर्णोदय
1967-2017

जिन मूरत को लखकर तुमने,
अपना वैराग्य बढ़ाया है।
स्वाध्याय में मन को लगाकर,
कदम से कदम मिलाया है।
स्तुति-निन्दा से दूर रहे तुम,
बस अपने में खो जाते हो।
जो भी देखता एक बार भी,
बस उनके ही हो जाते हो।।

स्वर्णोदय

1967-2017

जिस पत्थर ने चरण हुये है,
वो शंकर बन जाते हैं।
जिस जूल को छू लेते गुरूवर,
वो अमृत बन जाते हैं।
जहाँ से निकले मेरे गुरूवर,
वो राह स्वयं बन जाते हैं।
इनका वंदन करते-करते,
खुद के वन्दन हो जाते हैं।।

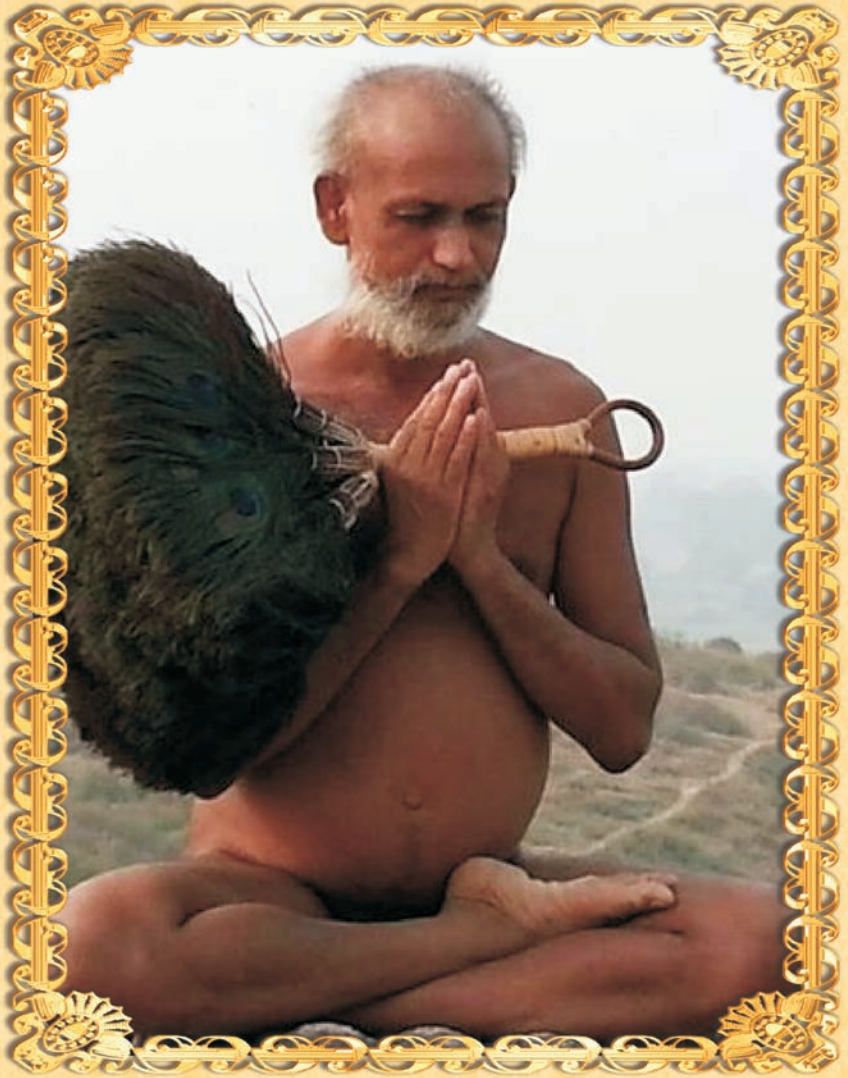

स्वर्णोदय
1967-2017

विमल सागर व सुमति सिन्धु,
जिनसे जीवन उत्थान किया।
शांतिसागर को उत्तम कहते,
पाय सागर का ध्यान किया।
जयकीर्ति तपोधन थे,
देशभूषण जी संत महान।
विद्यानन्द जी गुरू आपके,
राष्ट्र संत में रहे महान।।

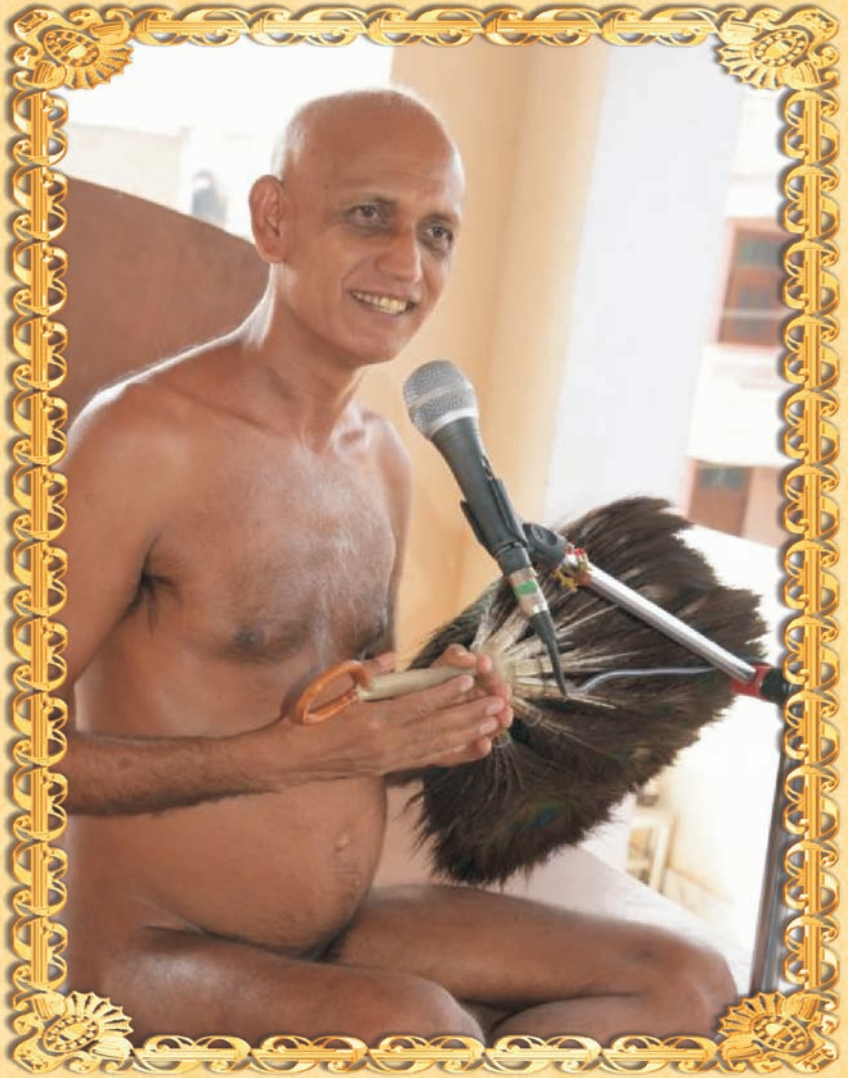

स्वर्णोदय
1967-2017

दीपक के सम् जलते गुरुवर,
अन्धकार का काम नहीं है।
सारे तीरथ देखे हमने,
गुरुदेव सा धाम नहीं है।
तन पिंजड़े से पंछी उड़ता,
ऐसा गुरुवर कहते हैं।
मोक्षमार्ग के पथिक आप हो,
मोक्षमार्ग पर चलते हैं।।

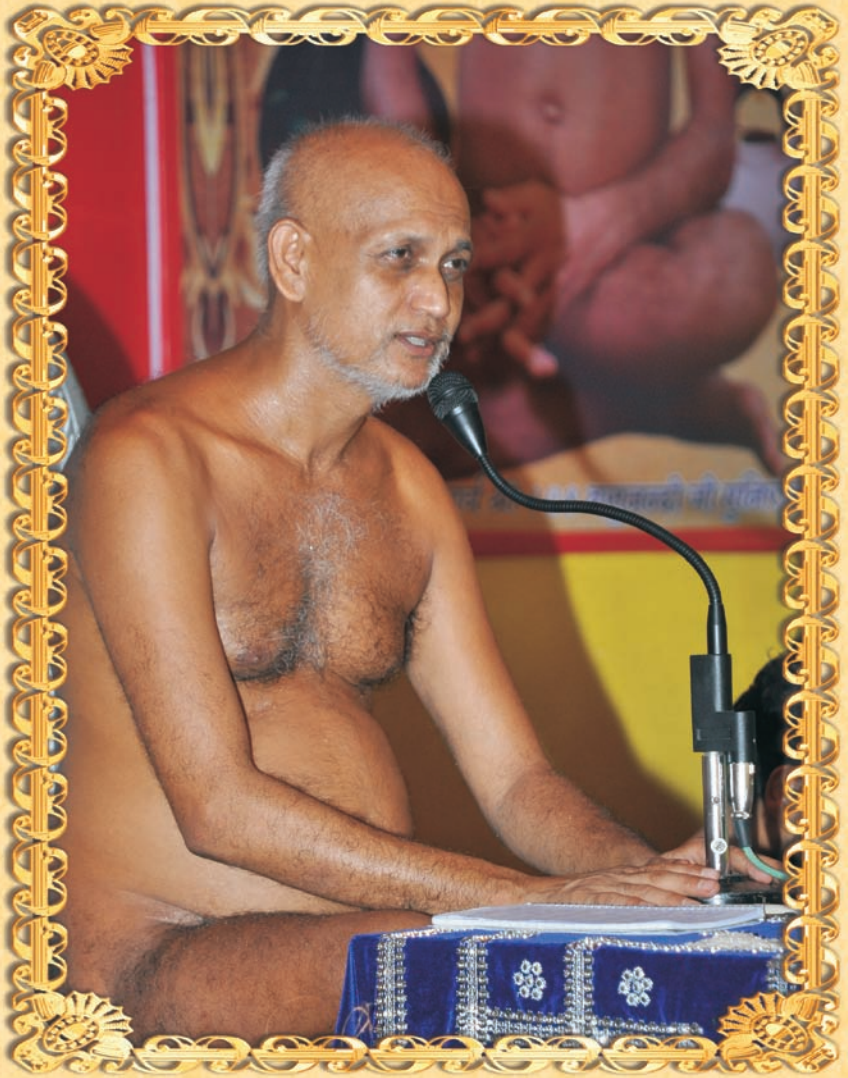

स्वर्णोदय
1967-2017

भक्ति करना पुण्य कमाना,
ये गुरुवर की वाणी है।
वाणी सुन लो आज गुरु की,
ये कहती जिनवाणी है।
सार-सार को बता रहे है,
समवशरण भी दिखा रहे।
निर्मल पथ को देने वाले,
बात हृदय की बता रहे।।

स्वर्णोदय

1967-2017

स्वयं जगे हो, हमें जगा रहे,
ये ही गुरु का परिचय है।
सिद्धांत ज्ञान को बता रहे हो,
मानो मुक्ति का परिणय हो।।
क्षमा शील हो क्षमावान में,
अमृत का कलशा लाये हो।
ज्ञान के मोती बाँट रहे हो,
क्योंकि उनको ही लाये हो।।

स्वर्णोदय

1967-2017

ज्ञानामृत का पान कराते,
मन की बगियाँ खिला रहें।
बात-बात में हमें बताकर,
मोक्षमार्ग को दिखा रहे।
बाँट रहे है अमृत कण को,
करुणा के तुम सागर हो।
विद्यानन्द के हदय विराजे,
आप तो गुरुवर नागर हो।।

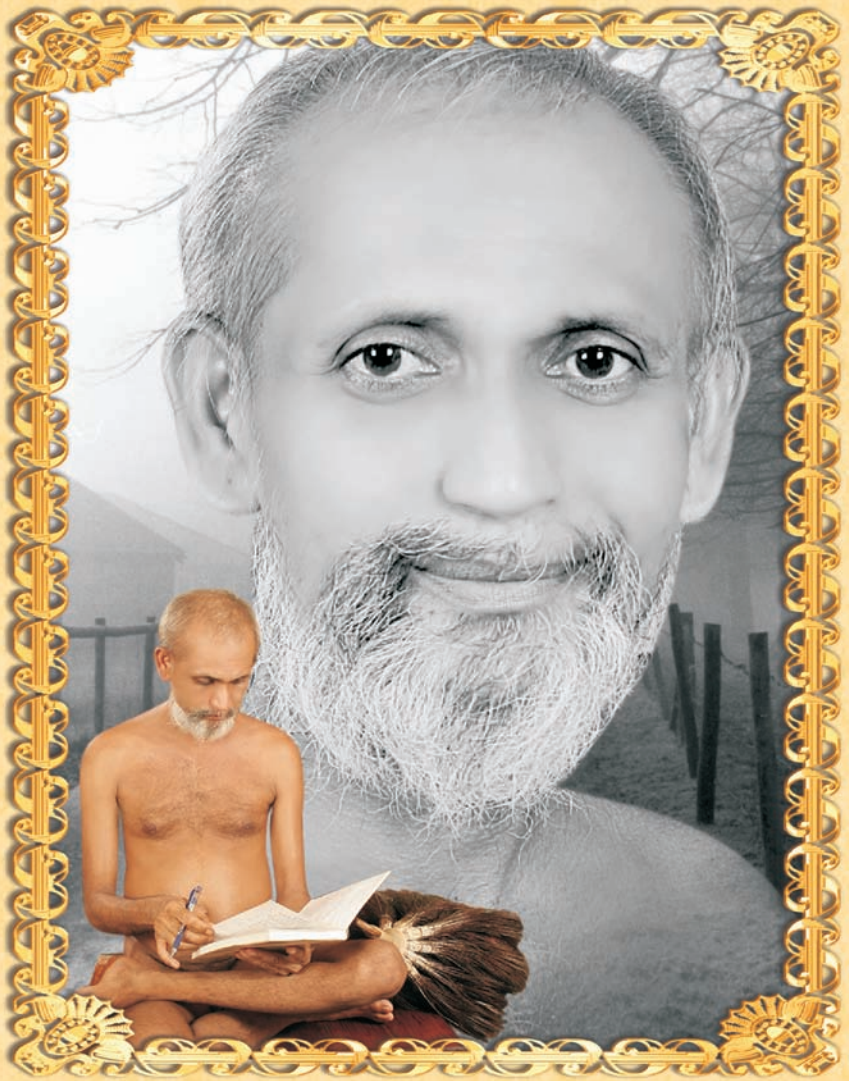

स्वर्णोदय
1967-2017

कुन्दकुन्द के लघुनन्दन हो,
जिनवाणी के पुत्र कहे।
गणधर जैसे भाई मिले है,
ज्ञानानन्द से शिष्य कहे।
परम हितेशी आप हो गुरुवर,
मैंने तो पावन माना है।
कोई कहता ऋतुएँ तुमको,
मैंने तो सावन माना है।।

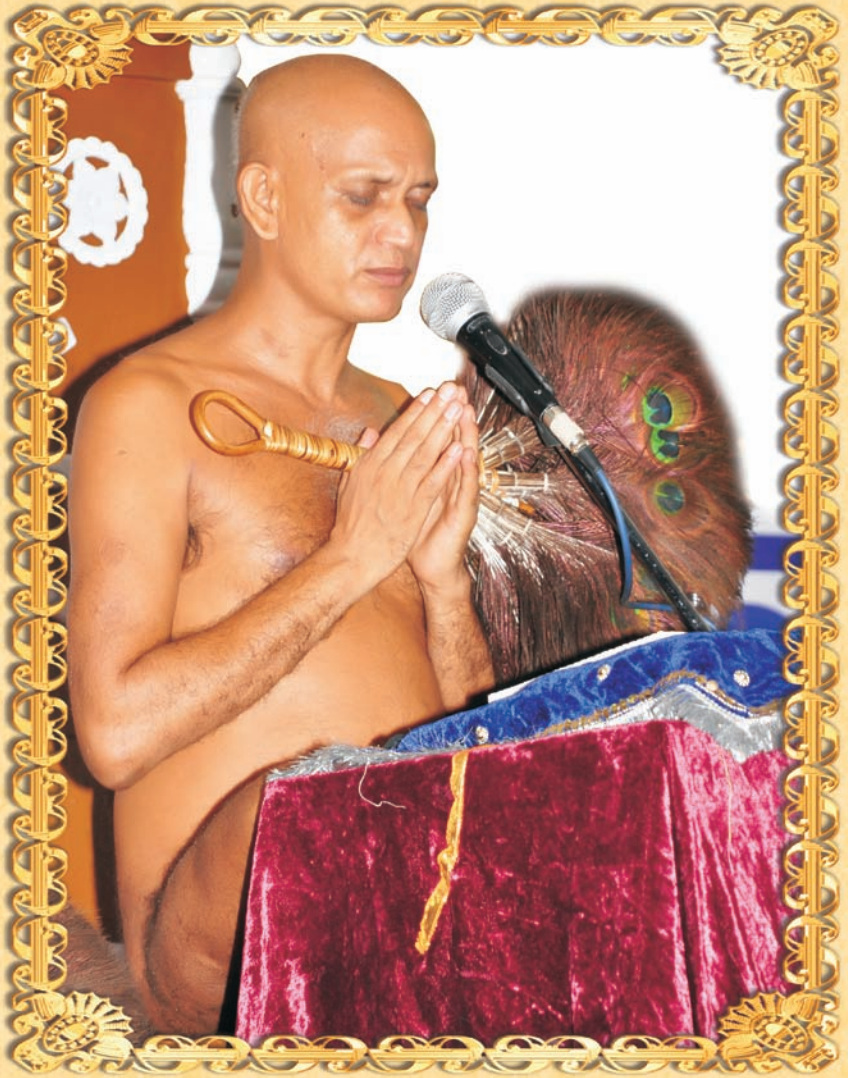

स्वर्णोदय
1967-2017

आनंद स्तोत्र बहा रहे हो,
भक्ति का भाव जगा रहे हो।
पुण्य पाप की कथा सुनाकर,
मोक्ष मार्ग में लगा रहे हो।
आत्म विश्वास है रूप आपका,
दुर्गति से बचा रहे हो।
जो फंस गये है पाप-पंक में,
हाथ पकड़कर उठा रहे हो।।

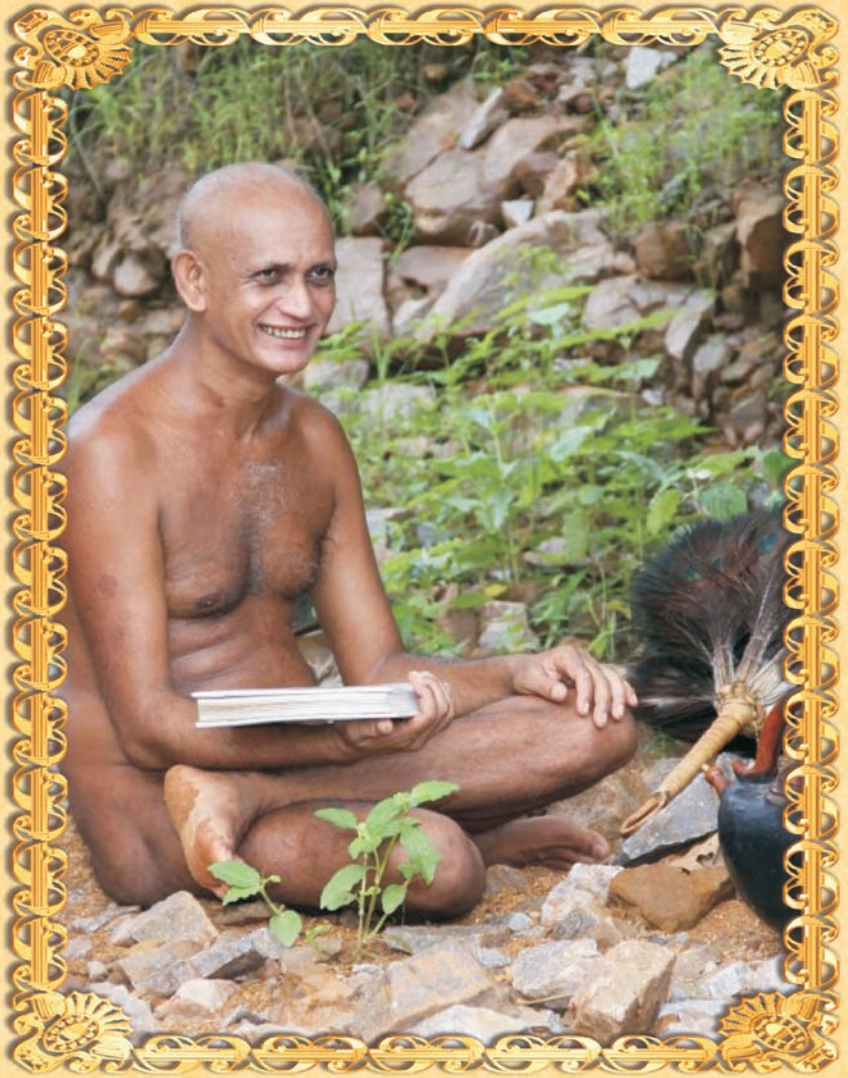

स्वर्णोदय
1967-2017

णमोकार सा मंत्र नहीं है,
पैंतीस अक्षर वाला है।
ऋषिमण्डल सा यंत्र नहीं है,
सर्व शक्ति मतवाला है।
वशीकरण सा तंत्र नहीं,
वश में करने वाला है।
गुरुदेव का रूप पूरे है,
उनका तो रूप निराला है।

स्वर्णोदय
1967-2017

अरिहंत प्रभु के प्रतिरूप हो,
करुणा का पाठ पढ़ाते हो।
वीतराग सम् वाणी कहते,
मोक्षमार्ग बतलाते हो।
पंक नहीं, पंकज बनना है,
सीप नहीं मोती बनना।
ज्ञान का रूप धरा धरती पर,
ज्ञानवान की ज्योति बनना।।

स्वर्णोदय

1967-2017

सिद्ध-श्रुत-आचार्य भक्ति से,
मैंने तुमको नमन किया।
अन्तरंग में दीया जलाकर,
मैंने तुम्हें पहिचान लिया।
आप ही गुरुवर आत्म हितेशी,
दीन-हीन की शरण बने।
फूल उगे है उस माटी में,
जहाँ गुरुवर के चरण पड़े।।

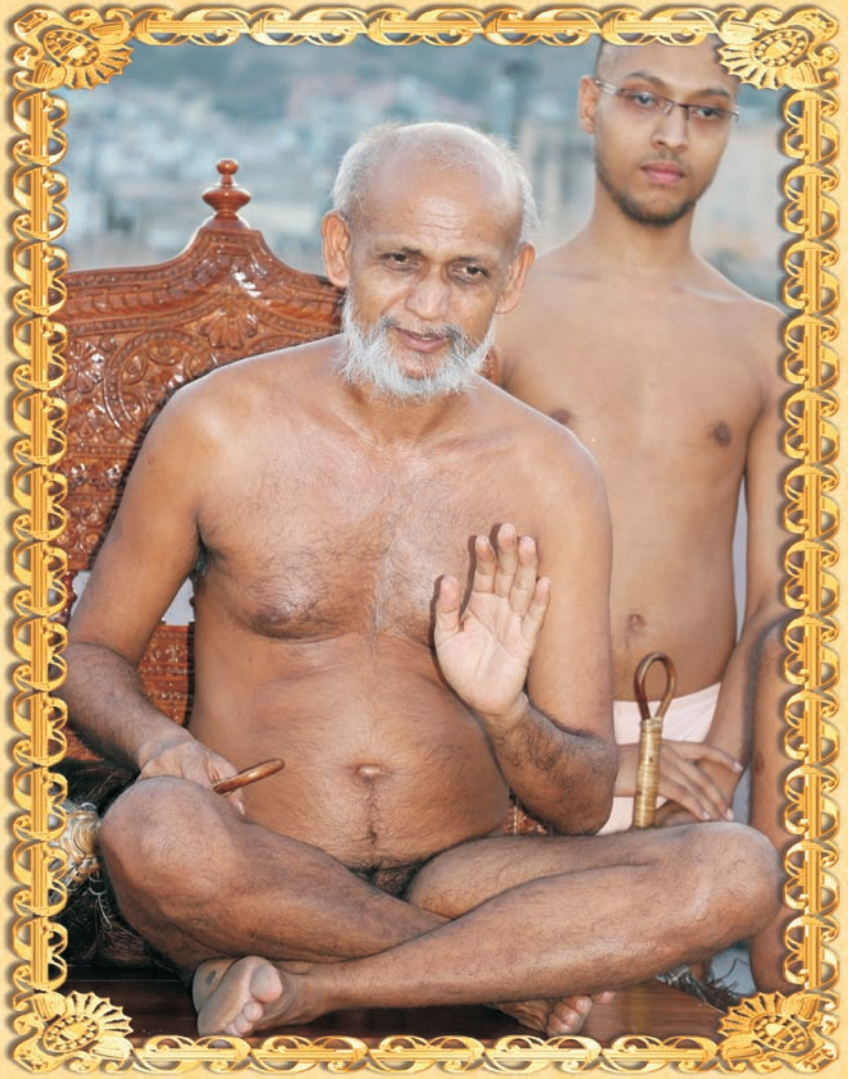

स्वर्णोदय

1967-2017

दिल्ली देखी, बम्बई देखा,
और कलकत्ता भी देख लिया।
गुरुवर जैसी लहर नहीं है,
हैदराबाद भी देख लिया।
बड़े-बड़े शहरों को देखा,
ताज महल भी देख लिया।
पर गुरुवर जैसा राज नहीं है,
धरती-अम्बर को देख लिया।।

स्वर्णोदय

1967-2017

मेरे गुरुवर कैसे हैं,
मानो भगवान जैसे है।
उनका कोई नाम नहीं है,
उनका कोई पता नहीं है।
वो मंजिल का ठोर ठिकाना,
उनसे मंजिल दूर नहीं है।
गुरु हमारे हदय बसे है,
गुरुवर भी हमसे दूर नहीं।।

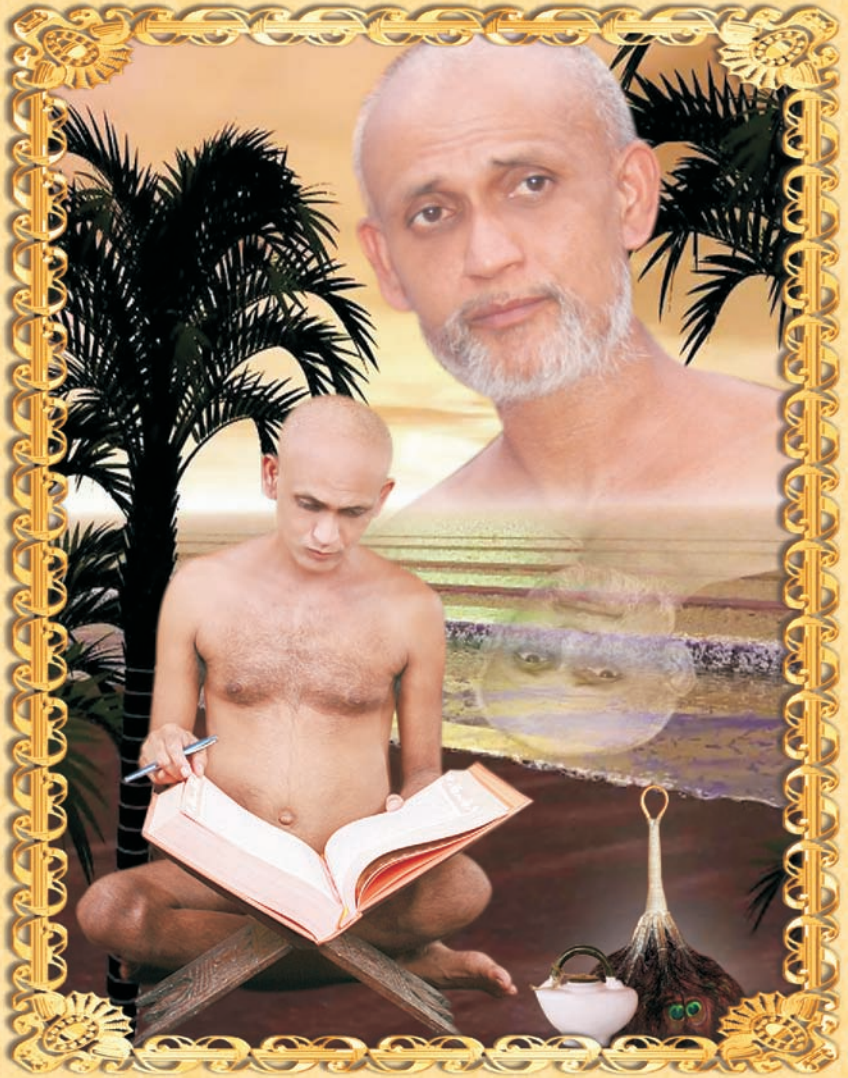

स्वर्णोदय
1967-2017

पूर्व जनम से घटना घटती,
बिना निमित्त के कर्म न आते।
पापी मानव कुछ भी कर ले,
लेकिन उसके धर्म न आते।
आगम की बात बताते गुरुवर,
शब्द-शब्द में सार भरा।
एक वाक्य ही गुरु वचन है,
जिसमें जीवन का सार भरा।।

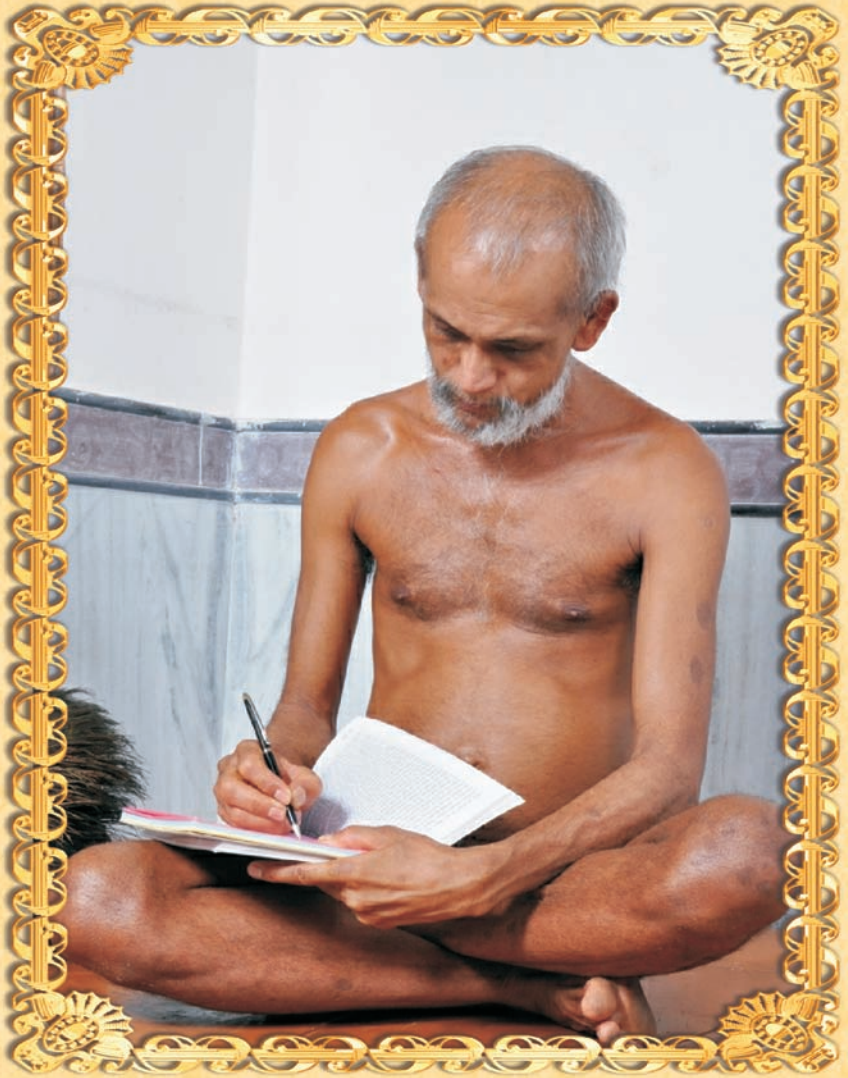

स्वर्णोदय
1967-2017

शत्रु-मित्र का भेद न पाला,
आगम का पाठ पढ़ाया है।
मन-वच-तन से पूर्ण समर्पण,
गुरु ने यही सिखाया है।
सोते धरती, ओढ़े अम्बर,
इतना ही गुरु का परिचय है।
चल रहे है, मोक्षमार्ग पर,
मानों मुक्ति से परिणय है।।

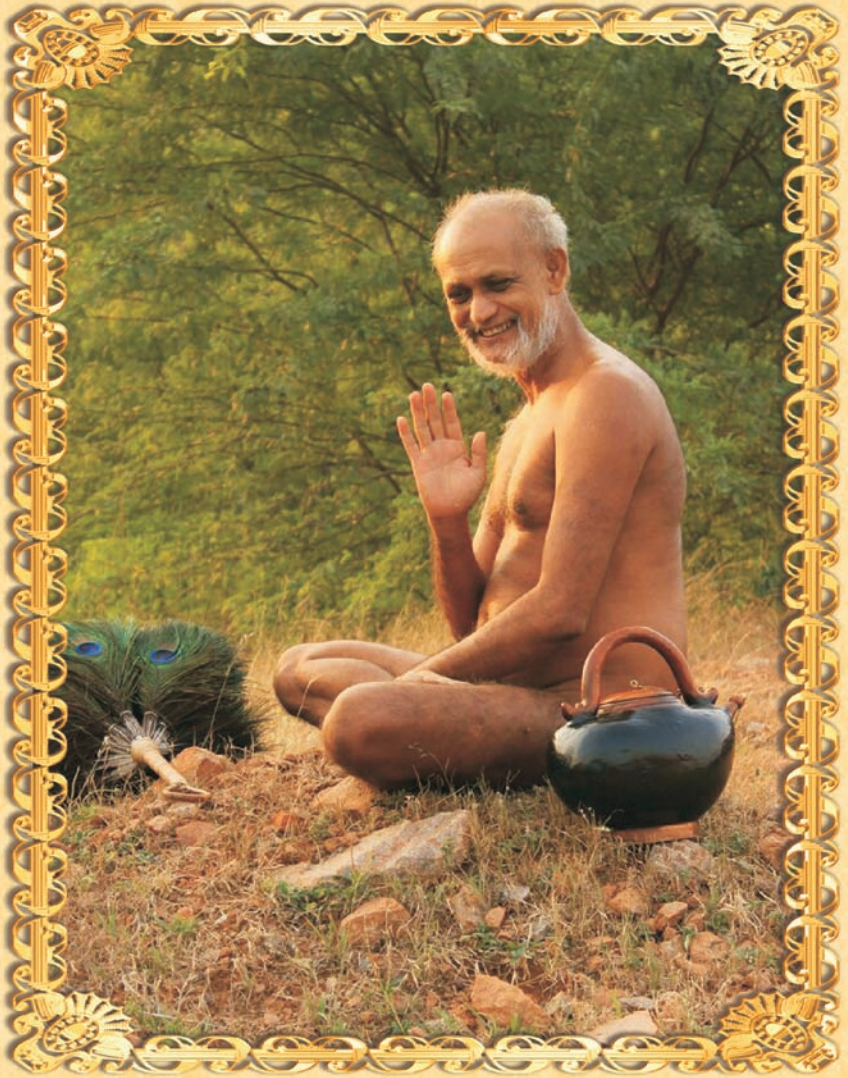

स्वर्णोदय

1967-2017

पथ ये पावन दिखा रहे हो,
मानो कस्तूरी काम किया।
उपसर्गों को सहकर गुरुवर,
धरती अम्बर पर नाम किया।
छवि आपकी इतनी सुंदर,
कर्म कालिमा भगती है।
वसुनन्दी की शरण भली है,
जो आँखों में सजती है।।

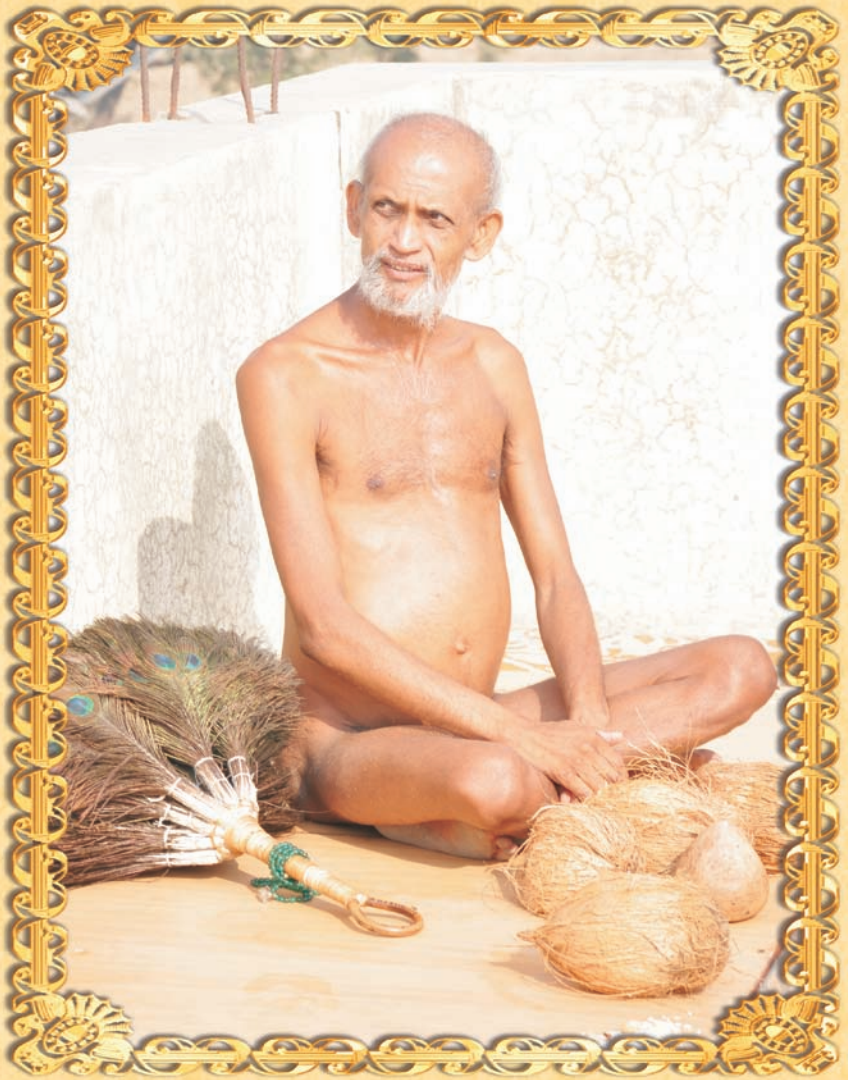

स्वर्णोदय
1967-2017

निष्काम साधक बने हो गुरुवर,
निष्परिग्रह रहते हो।
नील गगन से रहते गुरुवर,
निर्मल धारा में बहते हौ।
पिच्छी और कमण्डल लेकर,
जैन धर्म का मार्ग दिया।
हाथ पकड़कर मैंने गुरुवर,
अपना साथी बना लिया।

स्वर्णोदय
1967-2017

समता से ममता को छोड़ा,
और परिग्रह उतार दिया।
प्राणी मात्र के बसे हृदय में,
और जीवन का सार दिया।
ऊँच-नीच का भेद नहीं है,
हिये तराजू धार लिया,
ज्ञान-ध्यान में रमते योगी,
मानो धरती अवतार लिया।।

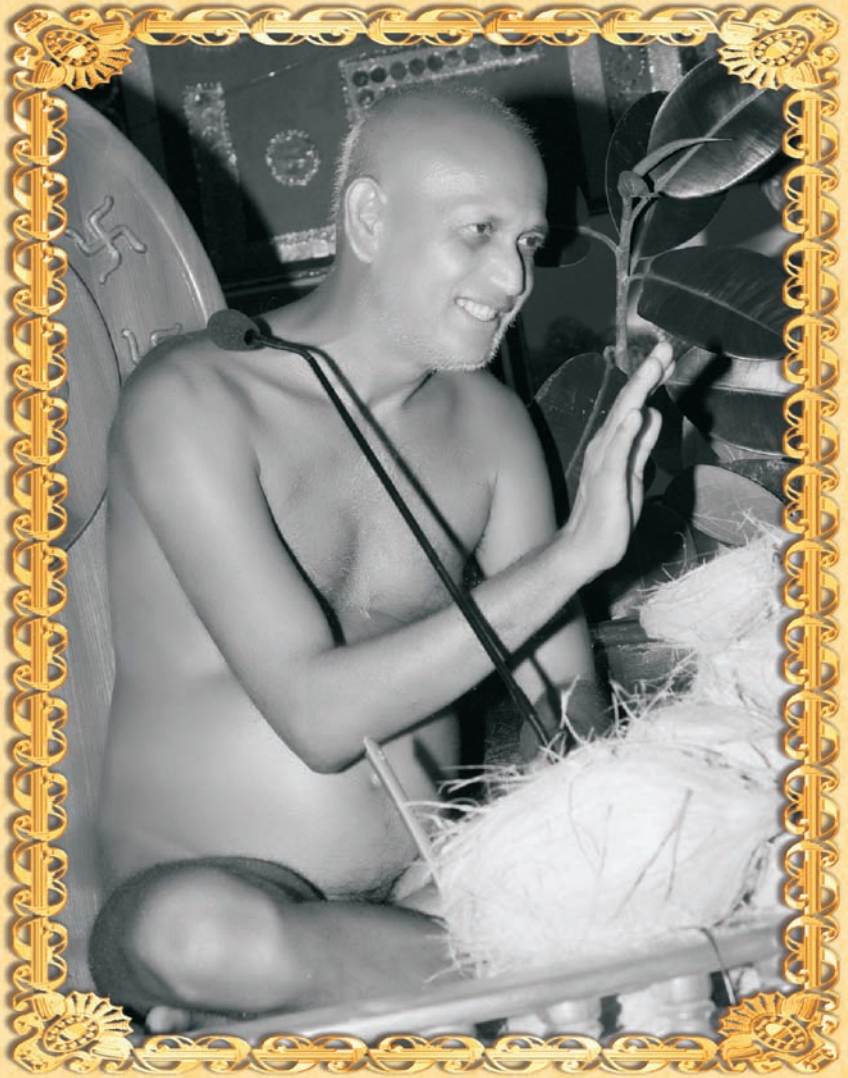

स्वर्णोदय

1967-2017

पूरब पश्चिम उत्तर दक्षिण,
स्वागत करती सभी दिशाएँ,
फूल खिले है हर बगियाँ में,
और चमन में आयी बहारें।।
देखों गुरुवर की भक्ति से,
क्या-क्या कमाल कर आये है।
आओं तो चरणों एक बार तुम,
क्या-क्या रूप दिखाये है।।

स्वर्णोदय
1967-2017

आंधियाँ तूफान हो,
पर गुरुवर तो किनारा है।
रास्ता कैसा भी हो,
गुरुवर तो सहारा है।
अँधेरी रात में गुरु तो,
दिये की तरह जलते हैं।
ये दिगम्बर है,
दिगम्बर की तरह चलते हैं।

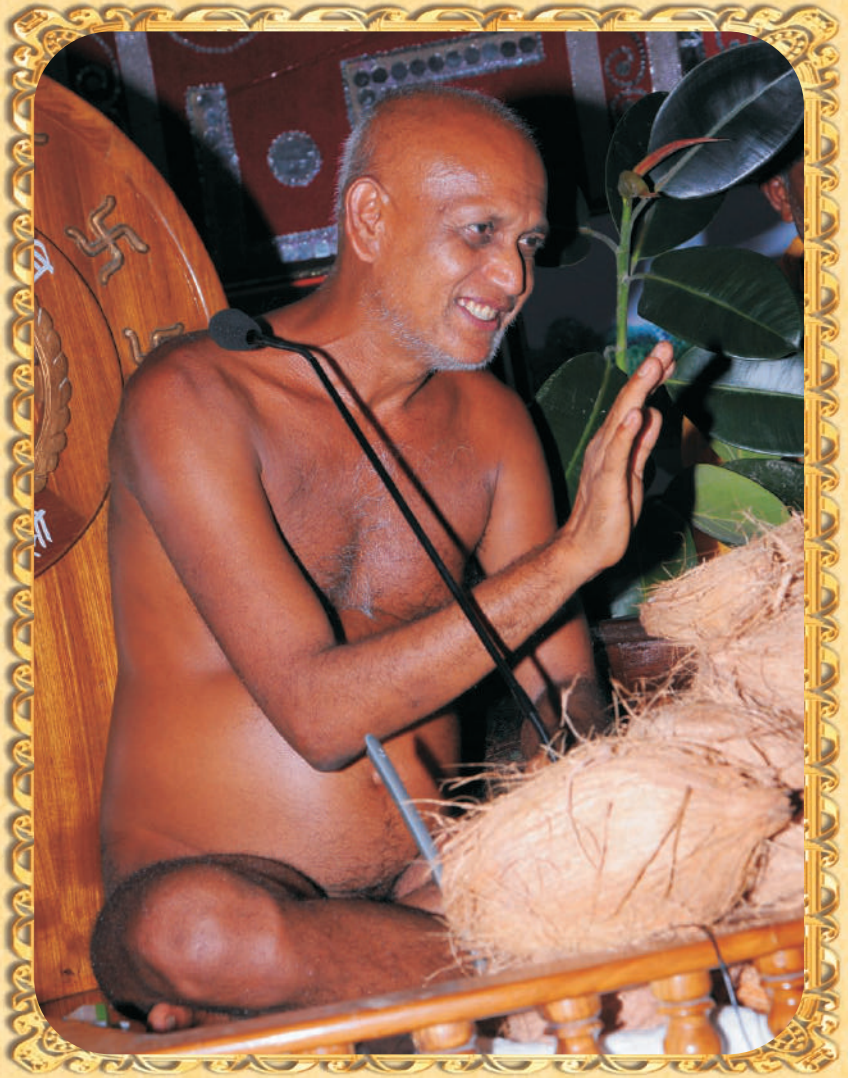

स्वर्णोदय
1967-2017

वसुनन्दी के हृदय कमल में,
पूज्य गुरुवर समाये हैं।
जिन्हें देखकर मोक्षमार्ग में,
कितने जीव आये है।
पतित जनों को पावन करते,
ऐसा नाम सुना गुरुवर।
मोक्षमार्ग के पथिक आप हो,
आप हितेशी हो गुरुवर।।

स्वर्णोदय

1967-2017

हमने मन की आँखों से देखा,
और मन में सदा छिपाया है।
गुरुवर आपको नजर लगे ना,
इसीलिये अँधियारा है।
काली रात में जन्में गुरुवर,
नाम दिनेश भी पाया है।
सूरज के सम् तेज भरा है,
नील गगन में पाया है।।

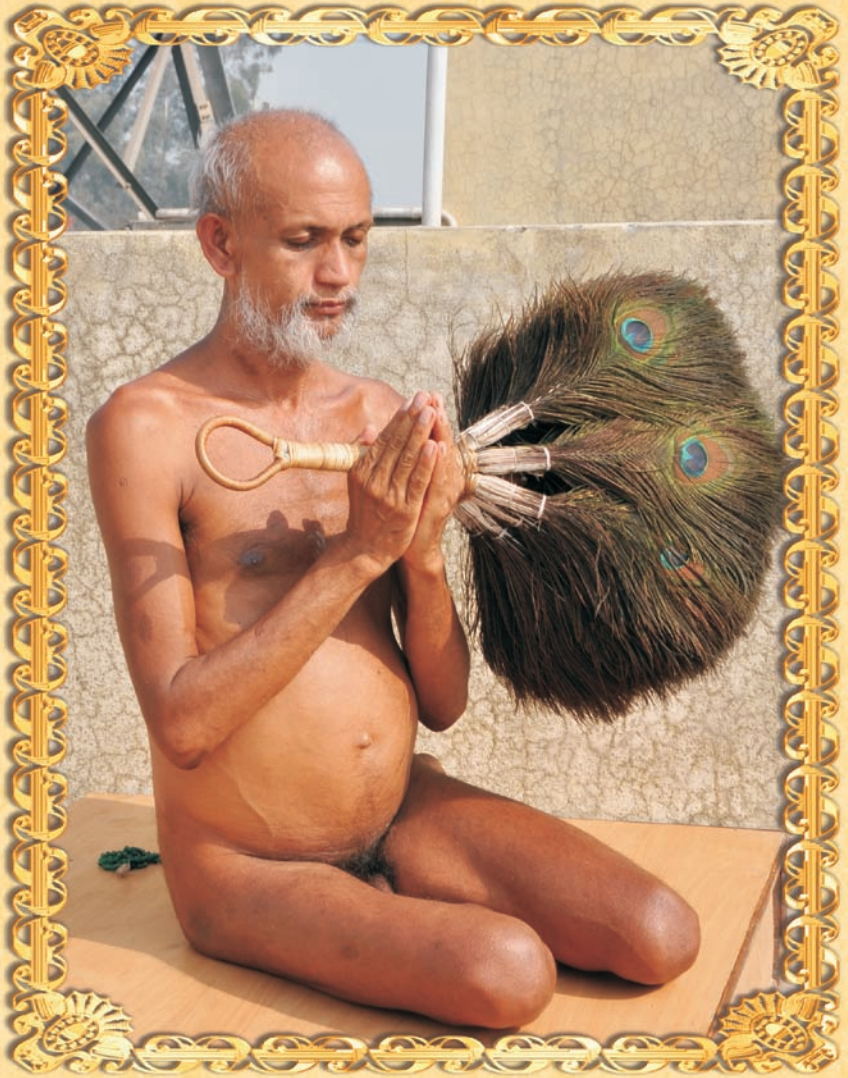

स्वर्णोदय

1967-2017

गुरु अपके वचन हमेशा,
सिद्ध कवच से होते हैं।
पुण्यवान ही होता है वह,
जो गुरु के संग में होते हैं।
डूबती नैया तिरा रहे है,
बिन मांझी के पार हुये।
वसुनन्दी की शरण में आ जा,
फिर सागर से सब पार हुये।।

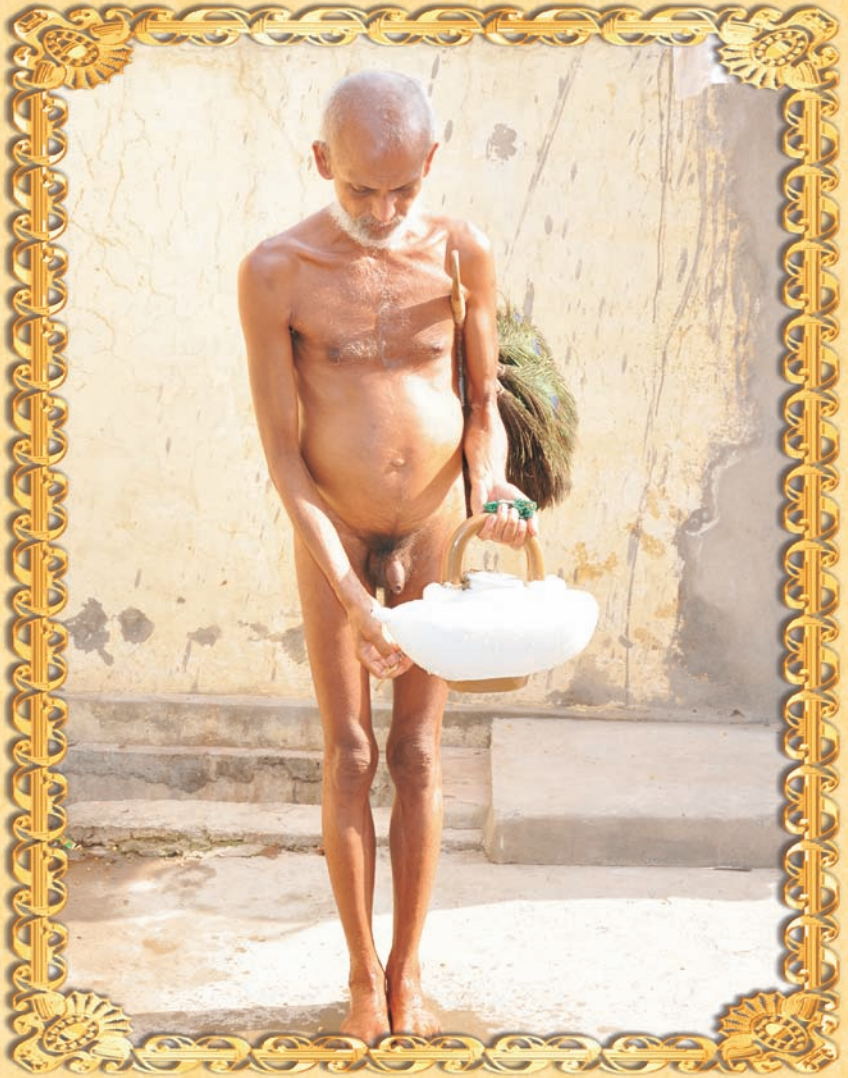

स्वर्णोदय

1967-2017

बिन मेहनत के कुछ न मिलता,
ऐसा गुरुवर कहते हैं।
जो मेहनत से जी को चुराते,
कष्ट सदा वो सहते हैं।
गुरुवर का नाम अनोखा पाया,
गुरुवर तो खुद में रहते हैं।
संत कहो अरिहंत कहो तुम,
हम तो गुरुवर कहते हैं।।

स्वर्णोदय

1967-2017

ज्ञान का भोजन करते गुरुवर,
पुण्य कोष को भरते हो।
इतना ज्ञान कहाँ से पाया,
विश्व कोश मय रहते हो।
कई कोस की दूर तय की,
फिर भी तन से न थकते हो।
इसमें भी गहरा राज छिपा है,
बस आप तो निशदिन चलते हो।।

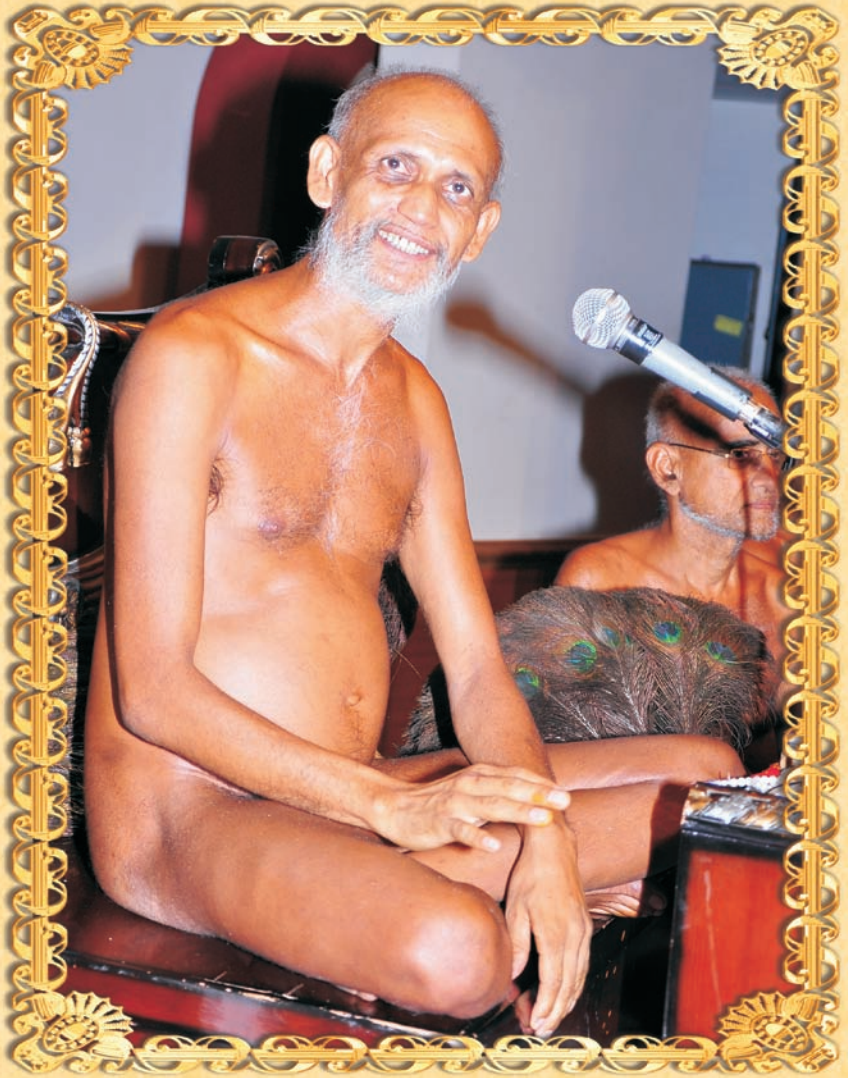

स्वर्णोदय
1967-2017

ठण्डी गर्मी सहकर गुरुवर,
देह को इतना तपा दिया।
मोक्षमार्ग भी कहाँ है गुरुवर,
आपने हमको बता दिया।
पुण्य धरा पर जन्में गुरुवर,
पुण्य की बात निराली है।
जहाँ-जहाँ गुरु चरण पड़े है।,
मानो आज दीवाली है।।

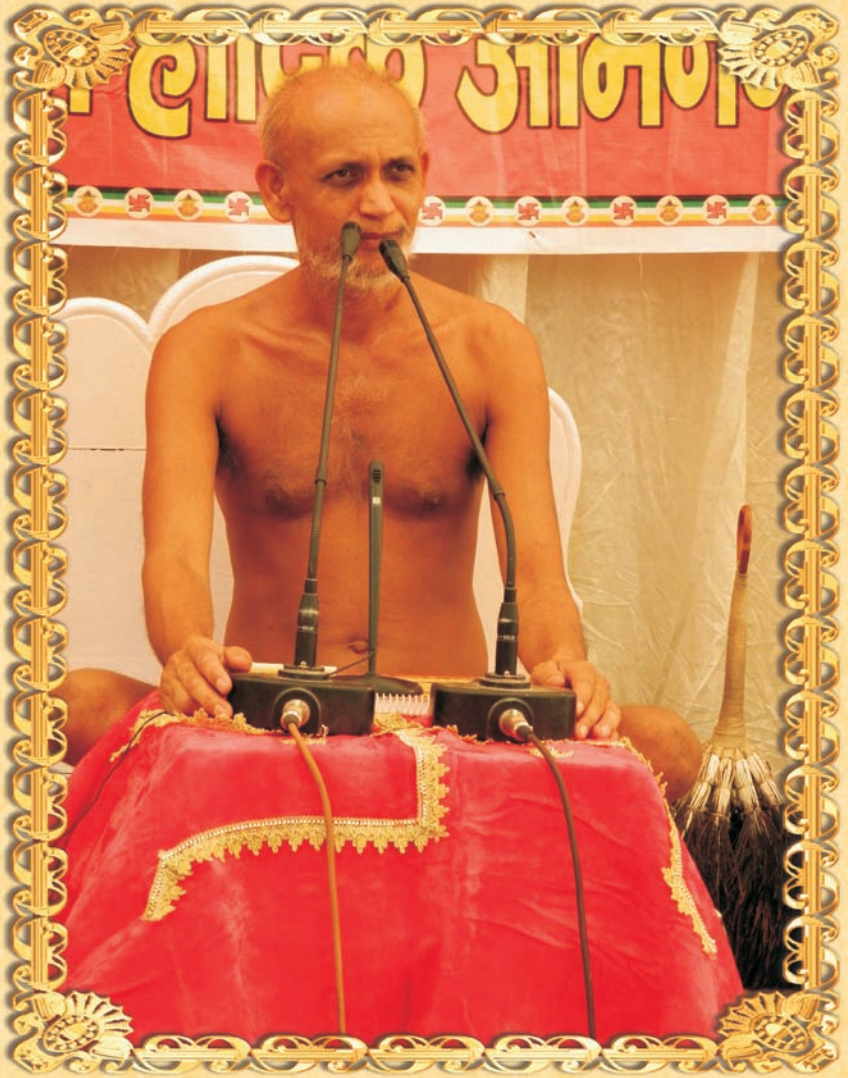

स्वर्णोदय
1967-2017

हम अंधियारे में चल देते हैं,
क्योंकि साथ तुम्हारा है।
कौन कहता किससे कहता,
गुरु का दर ये न्यारा है।
आकर देखों एक बार तुम,
गुरुवर का द्वार निराला है।
जो आता है सच ही मानों,
मानों किस्मत वाला है।।

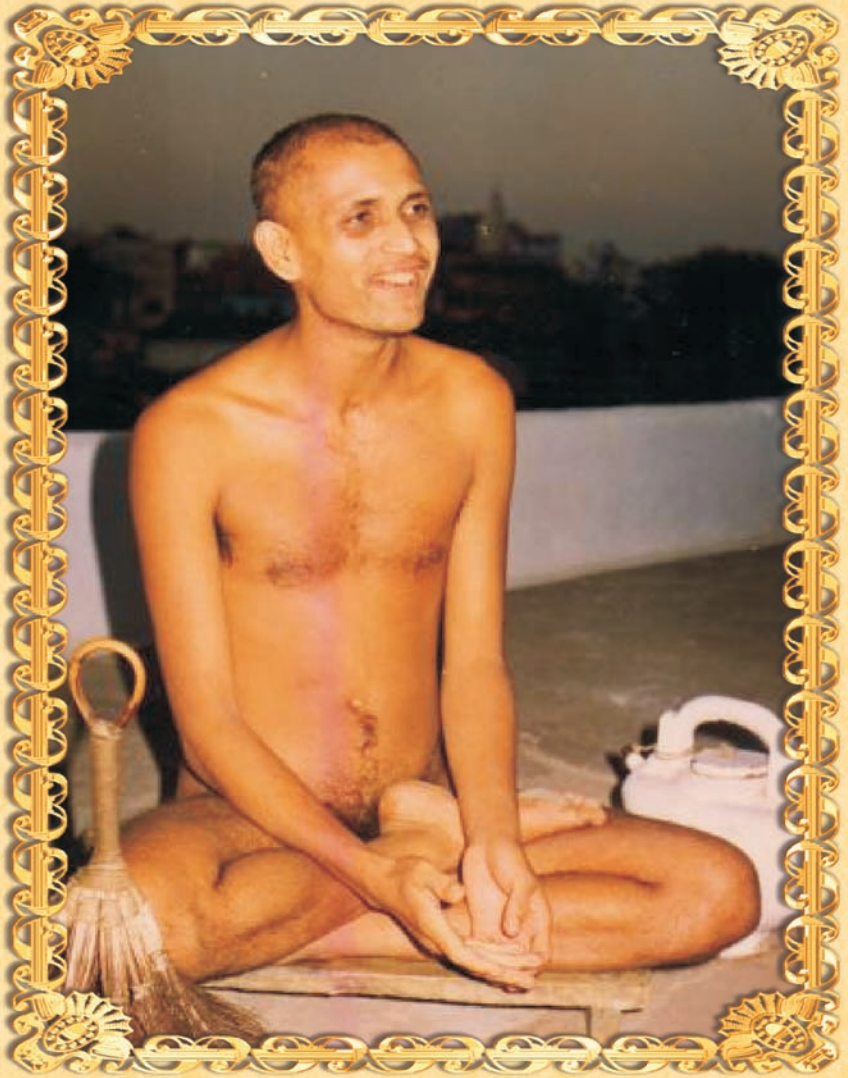

स्वर्णोदय
1967-2017

अंजली भर तो लेते गुरुवर,
दरिया भर तुम देते हो।
महाव्रतों को धारा गुरुवर,
संकट सारा हर लेते हो।
गुणवानों में गुणीवान हो,
श्रद्धा का दीप जलाया है।
कोई संकट आया हम पर,
बस गुरुवर ने साथ निभाया है।।

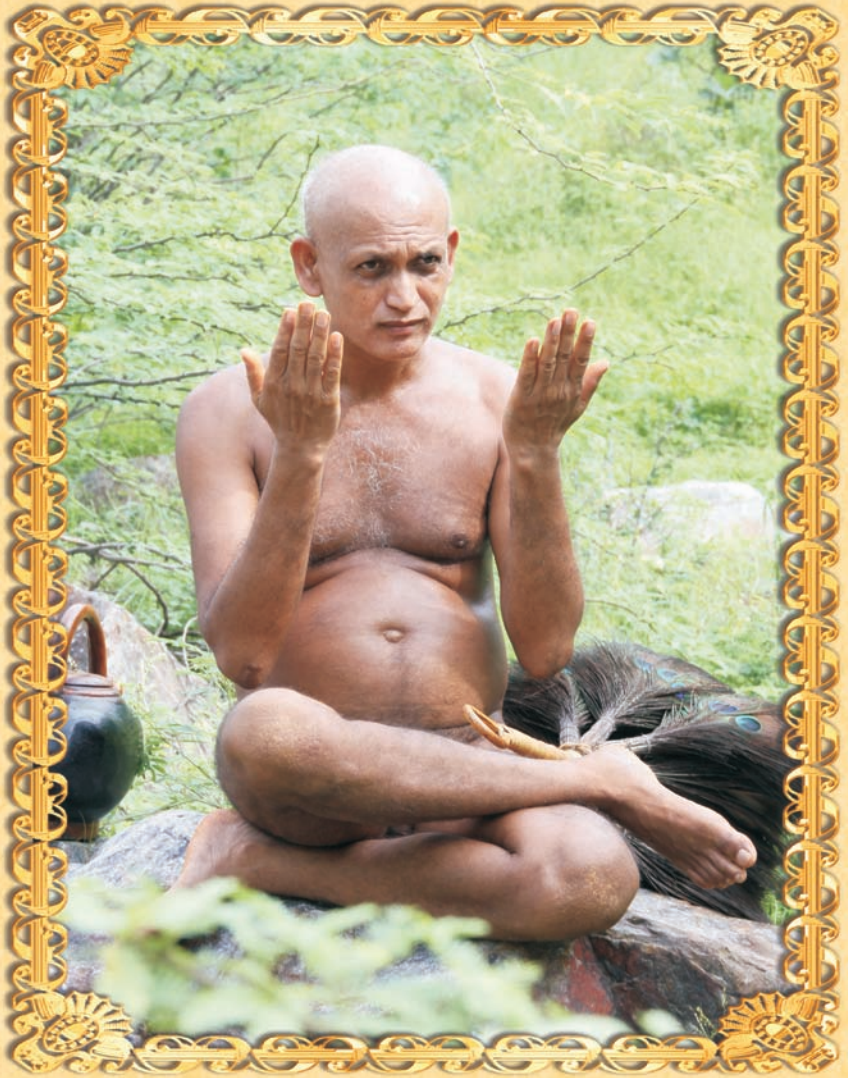

स्वर्णोदय
1967-2017

महावीर सी देह आपकी,
बाहुबली सा ध्यान लगा।
भरत मुनि सा मन वैरागी,
मानो चेतन का ज्ञान जगा।
नही परिग्रह तन पर देखा,
नाहीं कोई श्रृंगार किया।
निकल पड़े उस मोक्ष मार्ग पर,
इस धरती का उद्धार किया।।

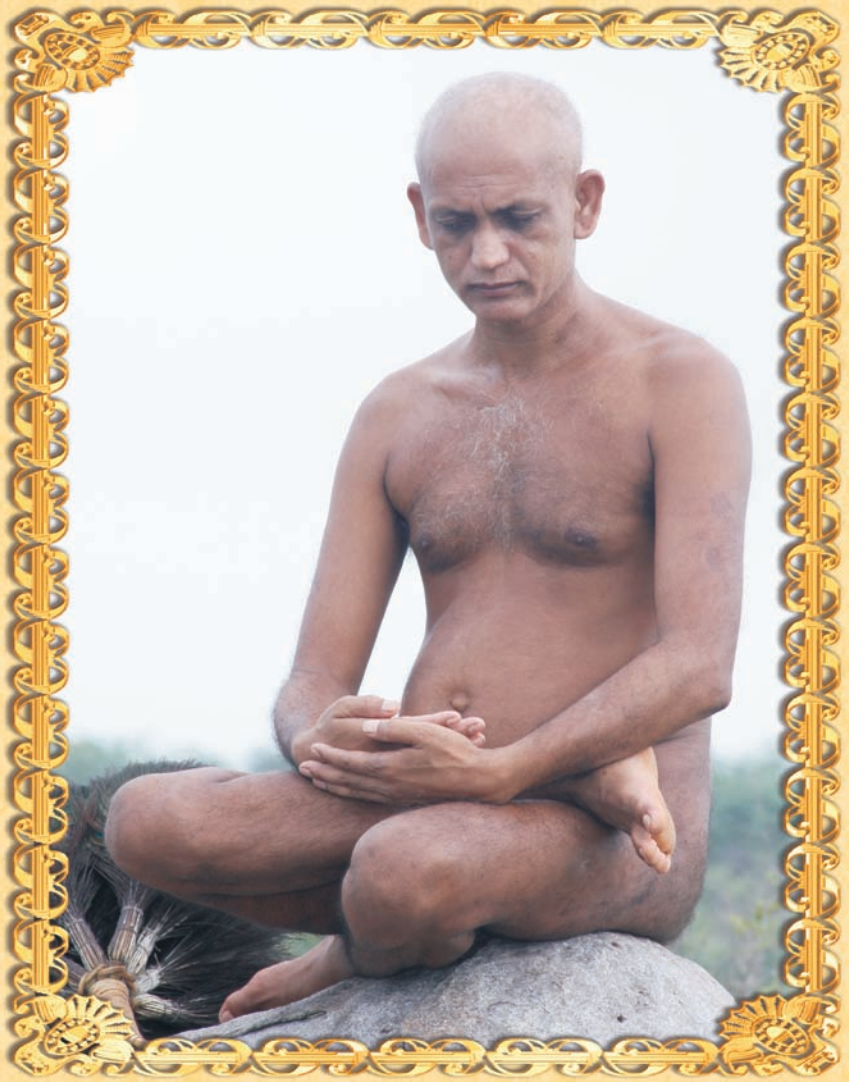

स्वर्णोदय
1967-2017

तस्वीर आपकी कितनी सुन्दर,
यह तकदीर हमारी है।
जब-जब बैठा ध्यान लगाकर,
मानो तस्वीर हमारी है।
हमें मिले है ऐसे गुरुवर,
मन मोहक जैसे लगते हैं।
आँखों में ऐसे समा गये है,
पाप करम भी भगते हैं।।

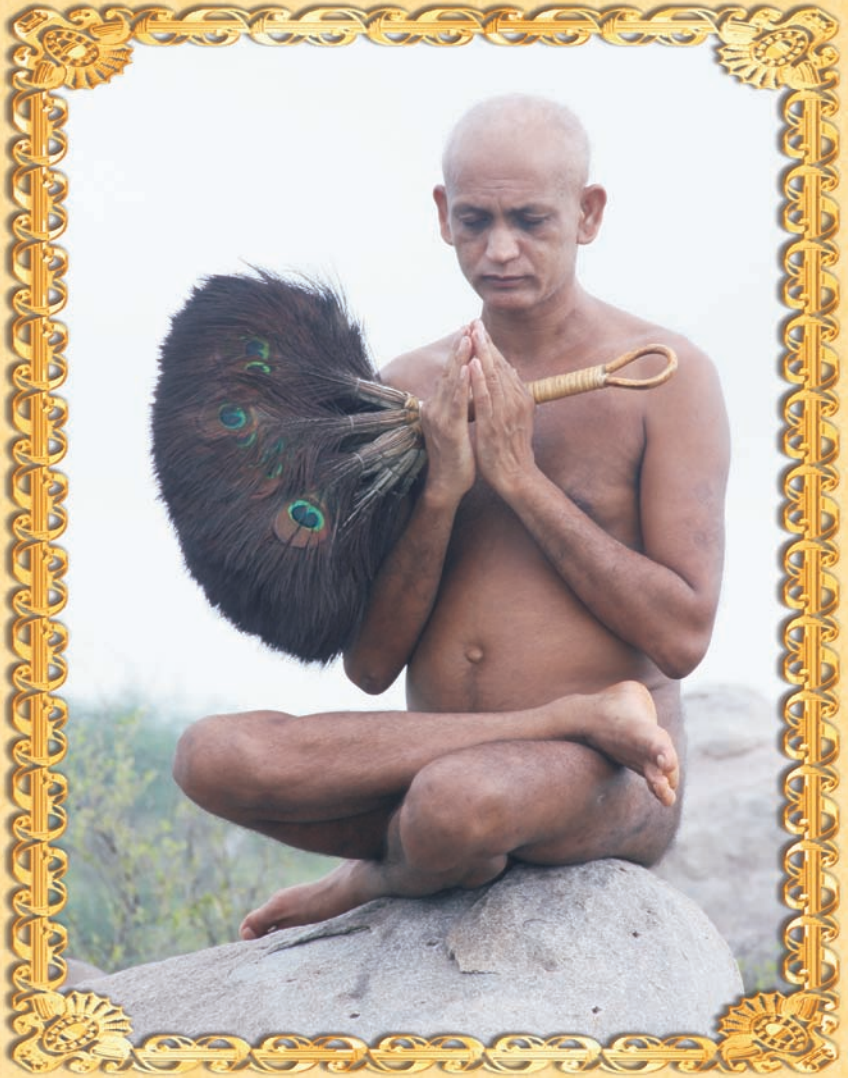

स्वर्णोदय

1967-2017

हर ठोकर ने हमें चलाया,
हर ठोकर ने हमें बचाया।
जहाँ-जहाँ से निकला गुरुवर,
आपका साया हमने पाया।
नही स्वप्न में हमको जीना,
स्वप्न हमें समझाते हैं।
जो भी करना जाग के करना,
गुरुवर कहके जाते हैं।।

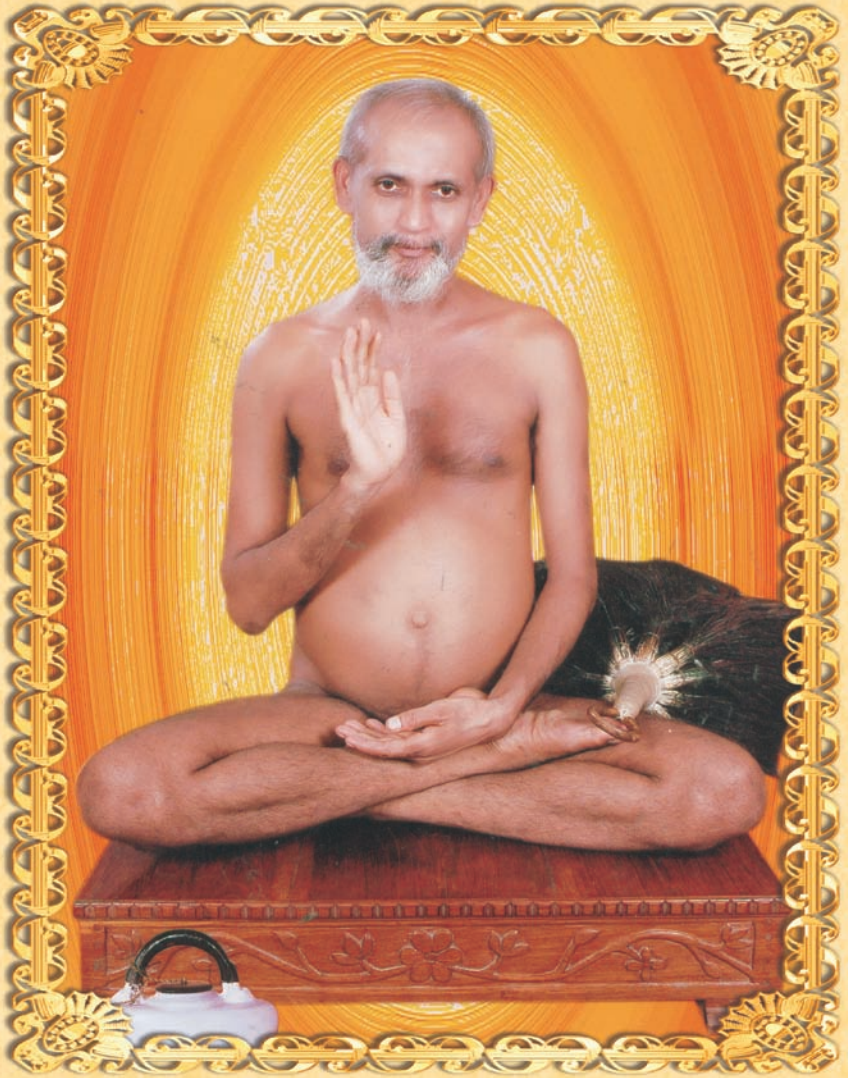

स्वर्णोदय

1967-2017

जबसे देखा हमने गुरुवर
नहीं निगाहें हटती है।
क्या पाना है किसको पाना,
यही इरादें भरती है।
मोक्षमार्ग के पथिक आप हो,
आपसे साँसे चलती है।
आप बिना भी क्या जीना है,
आपमें साँसे पलती है।।

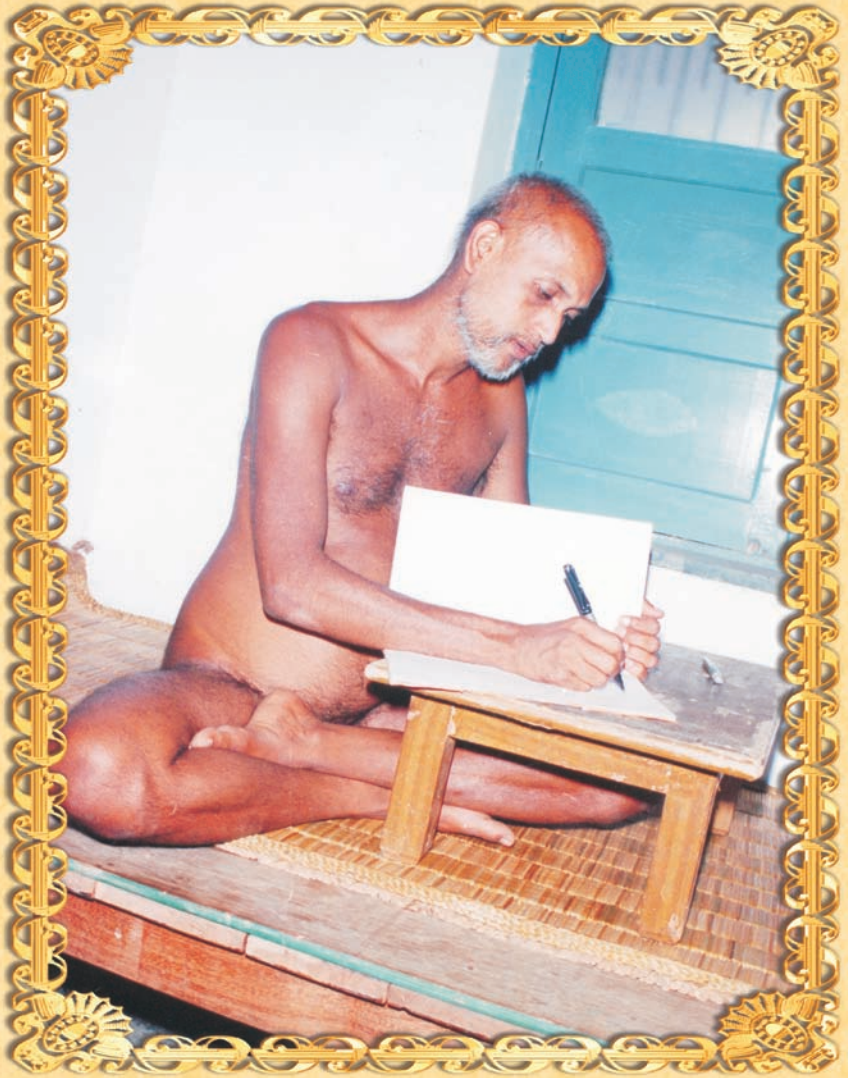

स्वर्णोदय
1967-2017

प्रखर बुद्धि श्रेष्ठ वक्ता,
श्रमणाचार कहाते हो।
गम्भीर हदय के धारी गुरुवर,
मोक्ष मार्ग दिखलाते हो।
हंसते-हंसते मार्ग चुना ये,
उपसर्ग हमेशा सहते हो।
सब कुछ पाकर सब कुछ छोड़ा,
महावीर सम् रहते हो।।

स्वर्णोदय
1967-2017

महा पुरूषों में नाम कमाकर,
वक्ताओं में प्रखर रहे।
नजर आपकी नजराना है,
जैनाचार्यों में संत दिखे।
मुनि चर्या का पालन करके,
और शिष्यों से करवाते हैं।
वसुनन्दी आचार्य शिरोमणि
धर्म ध्वजा लहराते हैं।।

समर्पण

श्रमण परम्परा को अक्षुण्ण रूप में अनवरत प्रकाश में लाने का प्रथम श्रेय बीसवीं सदी के प्रथमाचार्य दिगम्बर मुद्रा के धारी चारित्र चक्रवर्ती आचार्य श्री शांतिसागर जी महाराज को ही जाता है, उन्हीं की श्रमण परम्परा में महातपस्वी आचार्य श्री पायसागर जी महाराज हुए जो कि प्रतिदिन 200 णमोकार मंत्र की माला जपा करते थे। आपके ही शिष्य परम पूज्य अध्यात्म शिरोमणि आचार्य श्री जयकीर्ति जी महाराज हुए, जिन्होंने एक पोस्टकार्ड पर 'तत्वार्थसूत्र' एवं 'भक्तामर स्तोत्र' को अपने करकमलों द्वारा लिखा। आपके ही सुयोग्य शिष्य भारत गौरव आचार्य श्री देशभूषण जी महाराज जिन्होंने आचार्य श्री विद्यानन्द जी महाराज, आचार्य श्री सुबलसागर जी महाराज, आचार्य श्री बाहुबली जी महाराज, आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज, आचार्य श्री ज्ञानभूषण जी महाराज जैसे पंचरत्नों को देकर भारत का सोया भाग्य जगाया। उन्हीं की अक्षुण्ण परम्परा में भारत के प्रथम राष्ट्रसंत सिद्धांतचक्रवर्ती श्वेतपिच्छाचार्य प.पू. आचार्य श्री विद्यानन्द जी मुनिराज हुए जिनका दीक्षाकाल श्रमण परम्परा में सर्वाधिक मात्र में दीर्घकाल रहा हैं उन्हीं के परम प्रियाग्र शिष्य अनुशासन प्रिय कई विशेषताओं से परिपूर्ण ऐसे पूज्य गुरुदेव आचार्य श्री वसुनन्दी जी महाराज जो कि लाखों–करोड़ों दिलों पर राज करते हैं। जिनकी अध्यात्म व मधुर कण्ठ से अवतरित 'मीठे प्रवचन' सभी की प्यास बुझा रहे हैं।

प.पू. अभीक्षण ज्ञानोपयोगी युवा मनीषी, साधना के शिखर पुरुष, अध्यात्म सरोवर के राजहंस, दीक्षा सम्राट, परम वाग्मी, ऐसे प.पू. आचार्य श्री वसुनन्दी जी महाराज का स्वर्ण जन्म जयंती महोत्सव बनाने का हमें सुअवसर प्राप्त हुआ है। जिसे 'स्वर्णोदय' के नाम से घोषित किया गया है। यह श्रृंखला भारतवर्ष में प्रभावना करते हुए पूरे वर्ष मनाया जायेगा, उसी की अभिन्न कड़ी यह 'स्वर्णोदय' पूज्य गुरुदेव के श्री चरण कमल में समपर्ण।

प.पू. आचार्य श्री एक कथाकार, प्रवचनकार और साहित्यकार होते हुए भी आगम के प्रत्येक मर्म को जानने वाले, आपके द्वारा जैनागम का कोई भी विषय अछूता नहीं रहा।

अंत में उन्हीं को दिया उन्हें समर्पित करते हैं और सिद्ध, श्रुत, आचार्य भक्ति सहित उनके श्री चरणों में कोटि–कोटि वंदन करते हैं।

ऐलक विज्ञानसागर

अतिशय क्षेत्र जयशांतिसागर निकेतन

29 सितम्बर 2017

नमनकर्ता

Arun Jain
President, Shri Digambar Jain Samaj, Ankur Vihar
9654039890

Monika Jain
Vice-President, Mahila Mandal, Ankur Vihar
9999782028

Akash Jain
Cashier, Jain Yuva Madal, Ankur Vihar
8860803034

Ayush Jain
Member, Jain Yuva Mandal, Ankur Vihar
9999718969

women plus™

(A Unit of Mahabir Creation)

Manufacturer & Wholesaler of Ladies Kurti

OFFICE : K-124, Karawal Nagar, New Delhi-110094

/womenplusindia /womenplusindia womenplus.wp@gmail.com

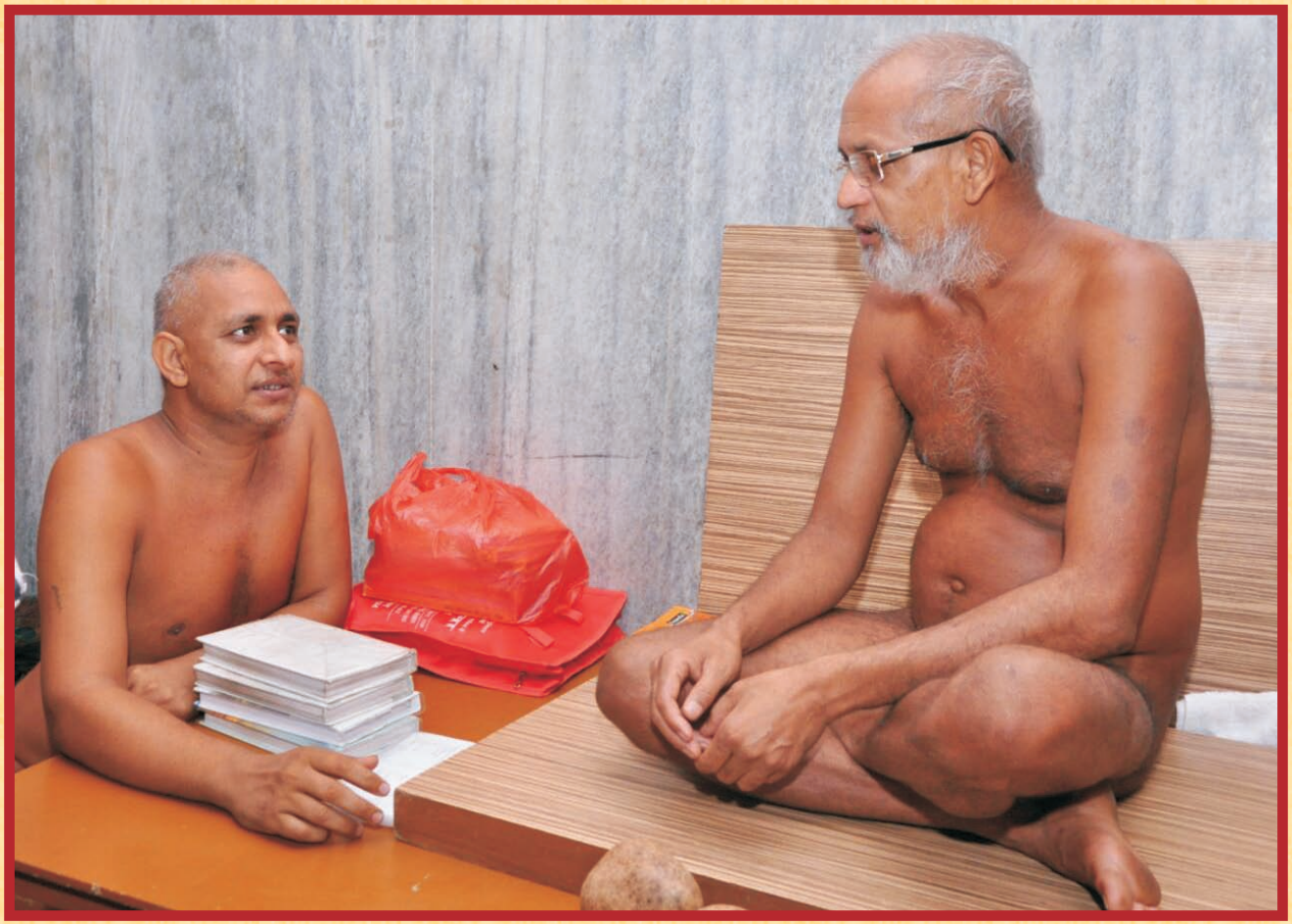

पूज्य गुरुदेव के साथ ऐलक श्री विज्ञानसागर जी महाराज शंकर नगर, दिल्ली में